चन्दामामा
सितम्बर १९७९
1 रु 25

DADDY
MUMMY
AND...
I
" ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग...जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना.
अपने बच्चों की सुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए...उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए.
ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
FOR SKETCHING COLOURING • SIGNING
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/८, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फान : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/68

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
3 36 3
5 144 7
7 ? 3
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : 12-10-1979
अपना उत्तर, कॅडबरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
GEMS
"Fun with Gems", Dept. No. D-8
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
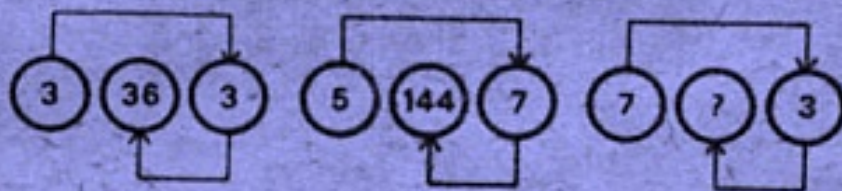
सितंबर 1979

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : १-२५

वार्षिक चन्दा : १५-००

सबसे दिलचस्प शौक़ फोटोग्राफ़ी को अब लिबर्टी कैमरा ने कितना सरल, कितना कम ख़र्च बना दिया है...!

नये शौक़ीन हों या कैमरा विशेषज्ञ, स्माइली और लूना कैमरा से फ़ोटोग्राफ़ी का मज़ा तो आता है ही, इनसे फ़ोटो खींचना बड़ा सरल है। ख़र्च भी कम आता है।

रु. ३५/-
टैक्स अलावा

- नये शौक़ीनों के लिए आदर्श
- चलाने में आसान
- देखने में आकर्षक
- १२७ रॉल फ़िल्म पर ४ सें.मी.× ४ सें.मी. की १२ तस्वीरें लेता है।

रु. ६०/-
टैक्स अलावा

लूना

- फ़ोटोग्राफ़ी का असली मज़ा लेने के लिए
- १२० रॉल फ़िल्म पर ६ सें.मी. × ६ सें.मी. की १२ तस्वीरें खींचता हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैशगन भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

उत्पादक:
फ़ोटो इंडिया
९७, सरदार पटेल रोड, सिकन्दराबाद, ५०० ००३

maa HFI/34/78 Hin

बॉब के साथ दुनिया की सैर
घर देखो ! देश पहचानो !
1
2
3
4
5
6
बच्चों की मुस्कान-
राष्ट्र की शान
Happy Child-
Nation's Pride
विश्व बाल वर्ष 1979
International
Year of the Child.
ULKA-BOB-MS-CM-1/9 HIN
माइनर्स सेविंग्स खाता खोलिए
बचत एक अच्छी आदत है
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
(भारत सरकार उपक्रम)
उत्तर : 1 उत्तरी अमरीका के एस्कीमो लोगों का बर्फ से बना घर. 2 यूरोप के लोगों का पत्थर का घर. 3 चीन, वियतनाम, बर्मा के लोगों का लकड़ी के खम्भों पर घास का घर.
4 अफ्रीकी लोगों का पेड़ पर बना घर. 5 अरबी लोगों का ऊंट की खाल से बना घर.
6 पश्चिम अफ्रीका के लोगों का मिट्टी और घास का घर.
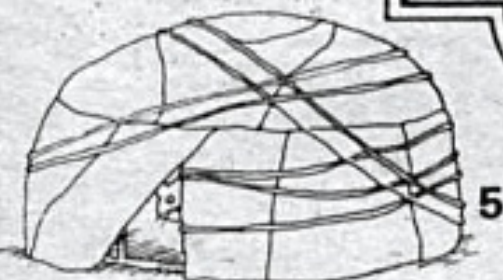
A CHANDAMAMA PUBLICATION
चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस महीने की बेताल कथा "दिव्य ज्ञान" है। अनेक लोग अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म-कुंडलियाँ दिखाते हैं। भविष्य के बारे में सतर्क रहना सचमुच विवेकपूर्ण कार्य है, हम अपने भविष्य को सुधारने के लिए बहुत सावधानी बरतते हैं, लेकिन जब हम अपने भविष्य को बदल नहीं पाते हैं, तब भविष्य को जानना विवेकशीलता नहीं है।
अमर वाणी
"विपत्तिः काल संजाता दुर्वारा येनकेन चित्,
सायं पद्मवने जाता हानिः केन निवार्यते ?"
[काल के अनुरूप जो विपत्ति आती है, उसे कोई बचा नहीं सकते, संध्या के समय कमलों को मुकुलित होते कौन रोक सकता है ?]
वर्ष : ३२ सितंबर १९७९ अंक : १
एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

ऐ. वेंकटेश्वरराव, नायुडुपेट (आन्ध्र)

प्रश्न : जन्म से अंधे व्यक्ति का जीवन ही अंधकारमय होता है न? क्या ऐसा व्यक्ति सपने देखता है? कम से कम सपने में ही सही उसे प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन करने का मौक़ा मिलता है?

उत्तर: जन्मांध व्यक्ति भी सपने देखते हैं। उनके सपनों में दृश्य नहीं होते। वे ध्वनि, रुचि, स्पर्श इत्यादि दृष्टि से भिन्न इंद्रियों की अनुभूतियोंवाले सपने देखते हैं। हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि जन्मांध लोगों के लिए प्राकृतिक सौंदर्य को सपने में देखने का मौक़ा मिलता है। ऐसे उदाहरण भी कम मिलते हैं जो जन्मांध लोगों ने सपने में किन्हीं दृश्यों को देखा हो और हमें बताया हो! अगर देखा भी हो तो उनकी दृष्टि की भावना की साधारण दृष्टि से तुलना नहीं कर सकते।

साधारणत: सपना देखते वक़्त दृष्टि रखनेवालों की आँखें तेज़ी से हिलती हैं। (Spasmodic conjugate, Rapid eye movements) ऐसा कंपन कुछ जन्मांध लोगों में देखा गया है। मगर साधारण दृष्टि रखनेवालों की आँखों के कंपन तथा जन्मांध लोगों की आँखों के कंपन में बहुत बड़ा अंतर होता है। मगर "एलेक्ट्रो अक्युलोग्राम" (Electro oculogram) नामक यंत्र के द्वारा रिकार्ड किये जानेवाले "कार्नियो फंडल पोटेन्सियल्स" (Corneo Fundal Potensials) नामक तत्व जन्मांध लोगों में नहीं होते, अगर होते भी तो कम मात्रा में। जन्मांध लोगों की दृष्टि से संबंधित कौन से भाग बिगड़ गये हैं, इसके तथा आँखों के कंपन के बीच गहरा संबंध है। थोड़े समय तक दृष्टि रहकर बाद को अंधत्व प्राप्त होनेवाले लोगों की आँखों में दृश्य होते हैं। मगर उम्र के बढ़ने के साथ वृद्धावस्था के समीप आने पर उनकी आँखों के दृश्य पूर्ण रूप से घट जाते हैं।

सारांश यह कि आँखों के कंपन तथा सपनों के दृश्यों को देखने में कुछ हद तक संबंध होता है!

[चन्दामामा के पाठकों को वह उत्तर देनेवाले महाशय श्री पी. वी. कृष्णाराव, लेक्चरर, साईकॉलजी एण्ड फरा साईकॉलजी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेर।]

अपरीक्षित कारकम्

[७४]

"दोस्त! हमेशा के लिए यों खड़े रहने से क्या भूख-प्यास तुम्हें सतायेंगी नहीं? थोड़े ही दिनों में क्या तुम्हारे प्राण निकल न जायेंगे?" अत्यंत लोभी ने पूछा।

"नहीं, लोभी व्यक्तियों के द्वारा खजाने लूटकर ले जाने से डराने के लिए कुबेर ने यह प्रबंध कर रखा है। चक्र जब तक सर पर घूमा करता है, तब तक भूख-प्यास, बुढ़ापा और मौत नहीं होतीं। मगर असहनीय पीड़ा होती है। अच्छी बात है, अब मैं चलता हूँ।" उस व्यक्ति ने बताया।

"सुनो भाई, इतने वर्षों बाद तुम्हारा घर अब कहाँ रहेगा? तुम्हारे परिवार के लोग कभी के मर गये होंगे। बताओ, अब तुम कहाँ जाओगे?" अत्यंत लोभी ने पूछा।

"ओह, मैंने यह बात सोची तक नहीं! फिर भी क्या हुआ? यह संसार अत्यंत विशाल है! यह जीवन बड़ा मधुर है। युगों के बदलने पर भी, अपने परिवार के सभी लोगों के मर जाने पर भी हम नई जिंदगी शुरू कर सकते हैं।" यों कहते वह व्यक्ति चला गया।

इस बीच उधर अतिलोभी ने सोने के खजाने के निकट अत्यंत लोभी का कई दिनों तक इंतज़ार किया। फिर भी उसके न लौटते देख उसने अपने लिए खजाने से सिर्फ़ पाँच हज़ार सिक्के लिये, तब अत्यंत लोभी की खोज में वहाँ से चल पड़ा, आखिर उसके समीप जाकर उसके सिर पर मथनेवाले चक्र को देखा। अत्यंत लोभी के शरीर और चेहरे पर भयंकर रूप से रक्त बह रहा था।

अपने मित्र को उस हालत में देखते ही अतिलोभी की आँखों से पानी बह आया। उसने अत्यंत लोभी से पूछा–"दोस्त! यह सब क्या है?"

"यह तो क़िस्मत की बात है!" अत्यंत लोभी ने जवाब दिया।

"यह कैसे हुआ?" अतिलोभी के पूछने पर अत्यंतलोभी ने अपना वृत्तांत सुनाया।

सारा वृत्तांत सुनकर अतिलोभी ने कहा–"दोस्त! तुम लोभ में पड़कर इस हालत में पहुँच गये हो! पुराने जमाने में मंथरक नामक जुलाहे ने नाई का सच्चा उपदेश जैसे नहीं सुना, वैसे तुमने भी मेरी सलाह की परवाह नहीं की।"

"वह कैसी कहानी है?" अत्यंतलोभी ने पूछा। इस पर अतिलोभी ने यों सुनाया :

किसी गाँव में मंथरक नामक एक जुलाहा था। एक दिन उसके करघे के खूँटे टूट गये। करघे की मरम्मत करने के लिए वह लकड़ी की खोज में कुल्हाड़ी लेकर चल पड़ा। उसे समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ दिखाई दिया। उसने सोचा कि उस पेड़ को काटकर वह कई खूँटे बना सकता है।

लेकिन उस पेड़ में निवास करनेवाली देवी ने कहा–"बेटा, यह पेड़ मेरा निवास है, तुम इसे काटो मत! मैं समुद्र की हवा का सेवन करते शांतिपूर्वक इस पेड़ में निवास करती हूँ।"

"तो आखिर मैं क्या करूँ? तुम्हीं बताओ, अगर मैं अपने करघे की मरम्मत न करूँगा तो मुझे खाना कहाँ से मिलेगा?" जुलाहे ने कहा।

"तब तो एक काम करो, तुम इस पेड़ की कोई हानि न करोगे तो तुम जो चाहोगे, सो मैं दे दूंगी।" वृक्ष देवी ने समझाया।

"अच्छी बात है! मैं घर जाकर अपनी पत्नी और दोस्त से पूछ आता हूँ कि आप से मुझे क्या माँगना है?" यों कहकर

जुलाहा शहर को लौट आया। अपने दोस्त नाई से मिलकर उसकी सलाह माँगी।

नाई ने सलाह दी–"तुम अपने लिए एक राज्य माँग लो। मैं तुम्हारा मंत्री बन जाऊँगा। हम दोनों आराम से अपने दिन बितायेंगे।"

"अच्छी बात है! फिर भी मैं अपनी पत्नी की भी सलाह लूँगा।" जुलाहे ने कहा।

"नहीं, तुम औरतों की सलाह मत लो! औरत को तुम बढ़िया से बढ़िया खाना खिलाओ, अच्छे गहने दो, कपड़े दो, मगर उसकी राय मत लो।" नाई ने कहा।

"नहीं, उसकी भी सलाह लेनी है।" यों कहकर जुलाहे ने अपने घर जाकर पत्नी की सलाह माँगी। साथ ही उसे नाई की सलाह भी बता दी।

"तुम नाई की बात कभी मत सुनो। वह तो सिर्फ़ हजामत बनाना जानता है। दुनियादारी बातें वह क्या जाने? राजा और राज्य की बाबत वह क्या जानता है? क्या राज्य चलाना मामूली बात है? युद्ध, संधि, समझौते आदि कई प्रकार की झंझटें होती हैं। राज्य के लोभ में पड़कर कभी कभी राजा के भाई और बेटे तक उसके प्राण ले लेते हैं।" जुलाहे की औरत ने समझाया।

"हाँ, तुम ठीक कहती हो, मगर यह बताओ कि मैं देवी से क्या माँग लूँ?" जुलाहे ने अपनी पत्नी से पूछा।

"तुम अपने दोनों हाथ और एक सिर का उपयोग करके रोज एक ही वस्त्र बुनते हो! उसके द्वारा हमारा गुजारा हो जाता है! अगर तुम देवी से दो और हाथ और एक सिर माँग लोगे तो उनसे तुम रोज दो वस्त्र बुनोगे। एक के पैसे से हमारा गुजारा होगा और दूसरे वस्त्र के बेचने पर उन पैसों से हमारा मनोरंजन होगा।" जुलाहे की पत्नी ने कहा।

"वाह! बहुत बढ़िया सलाह दी तुमने!" यों कहकर जुलाहा पेड़ के पास लौट आया और अपनी पत्नी की सलाह के मुताबिक दो और हाथ तथा एक सिर माँगा।

देवी ने उसकी इच्छा की पूर्ति की। मगर जब वह दो सिर और चार हाथ के साथ घर लौट रहा था, तब लोगों ने उसे भूत समझकर लाठी और पत्थरों से मारकर बेदम कर डाला।

अतिलोभी ने अत्यंतलोभी को यह कहानी सुनाकर आगे यों समझाया:

"तुम सोने के सिक्कों से संतुष्ट नहीं हुए। तुमने हीरों की कामना की। आखिर तुम्हारी क्या हालत हो गई? चक्र तुम्हारे सर पर घूमते मानिकों से भी ज्यादा लाल-लाल रक्त की बिंदुओं को चारों तरफ़ छितरा रहा है। तुमने जो हीरे चाहे, उनसे भी ज्यादा चमकनेवाली आँसू की बिंदुओं को तुम्हारी आँखें गिरा रही हैं! दोस्त! इतना मात्र जानने से वह ज्ञान नहीं कहलाता कि सोने से भी ज्यादा रत्न क़ीमती होते हैं। भविष्य में होनेवाली मुसीबतों और परिणामों को समझने की बुद्धि भी होनी चाहिए। ऐसा न होने पर बड़े से बड़ा मेधावी व कुलीन व्यक्ति भी खतरे का शिकार हो जाता है। दुनियादारी का ज्ञान सब से मुख्य है, वरना सिंह की रक्षा करनेवाले पंडित के जैसे नाश को प्राप्त होगा।"

"वह कैसी क़हानी है?" अत्यंतलोभी के पूछने पर अतिलोभी ने यों समझाया:

भल्लूक मांत्रिक

[१४]

[भल्लूक मांत्रिक तथा कालीवर्मा माया मर्कट का पीछा करते क़िले के पास पहुँचे। बधिक भल्लूक ने उन्हें क़िले के भीतर की लड़ाई का समाचार सुनाया। राजा जितकेतु का मंत्री जीवगुप्त ने वहाँ पहुँच कर एक सैनिक को कालीवर्मा के पास भेजा। इस बीच डाकू नागमल्ल और उसके अनुचरों ने क़िले के दर्वाजों पर आग लगाई। बाद...]

क़िले के दर्वाजे जलकर भस्म हो गये। इसे देख बधिक भल्लूक दौड़कर कटी सूंडवाले हाथी पर सवार हो वहाँ पर आ पहुँचा, तब बोला–"कालीवर्मा साहब, अब हम क़िले के भीतर प्रवेश करेंगे। वहाँ पर माया मर्कट ज़रूर हमारे हाथ लगेगा।" यों कहकर जलनेवाली लकड़ियाँ हाथ में ले उछल-कूद करनेवाले जंगली नौकर से बोला–"अरे जंगली सेवक! तुम जल्दी यहाँ आओ और इस हाथी को क़िले के भीतर ले जाओ।"

जंगली सेवक ने जलती लकड़ी को दूर फेंक दिया, डाकुओं के नेता नागमल्ल को सचेत कर बोला–"भल्लूक साहब, लो, मैं अभी पहुँचा।" यों कहकर वह हाथी की ओर बढ़ने ही वाला था, तब नागमल्ल ने उसे हाथ के इशारे से रोककर कहा–"यहाँ पर मेरे और मेरे अनुचरों के लिए काम

का सामना कर हिम्मत के साथ लड़ने का साहस क्या तुम नहीं रखते ?"

इस पर डाकू नागमल्ल ने एक बार सब की ओर खीझ भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा—"मैं जन्म से ही डाकू हूँ, ऐसी हालत में मेरे दुश्मन कौन हैं? और दोस्त कौन हैं? मेरी नज़र में सब लोग बराबर हैं। अपना पेट भरने के लिए जिसके पास धन मिल सकता है, मैं उन्हें लूट लेता हूँ। अब क़िले के भीतर चाहे राजा दुर्मुख जीत जाये या सामंत भूपति, मेरा बनता-बिगड़ता ही क्या है?"

भल्लूक मांत्रिक ने भांप लिया कि नागमल्ल उसकी सहायता करने के एवज में उचित धन की मदद पाने के वास्ते ही यों घुमा-फिराकर जवाब दे रहा है, इस ख्याल से उसने अपनी तलवार नागमल्ल के कंधे पर टिकाकर उच्च स्वर में कहा—"अबे नागमल्ल! इस तलवार में मंत्र की शक्तियाँ नहीं हैं, अगर यही मेरा मंत्र-दण्ड होता तो तुम्हें अब तक एक सियार के रूप में बदल डाल देता। राजा दुर्मुख को छोड़ कोई दूसरा अब विजयी होगा तो वह जंगल के खूंख्वार जानवरों जैसे ही तुम्हारा शिकार खेलेगा। क्या तुम यह बात भी भांप नहीं पाये? तुम तो निरे जंगली ठहरे।"

ही क्या रह गया है? यह सब देखने से ऐसा मालूम होता है कि यह तो मांत्रिकों के बीच का झगड़ा है। हम अपने रास्ते जंगल में जाकर फिर से अपना धंधा शुरू करेंगे।"

क़िले के दर्वाजों के समीप पहुँचनेवाला कालीवर्मा ये बातें सुन एक दम नाराज़ हो गया, नागमल्ल की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देख तलवार का निशाना करके बोला—"अबे जंगली लुटेरे! तुमने आख़िरी क्षणों में राह लूटकर जीने की अपनी कुबुद्धि का परिचय दे ही दिया है। टोह लगाकर बे हथियार मुसाफ़िरों को सिर्फ़ लूटना जानते हो तुम लोग; मगर शत्रु

ये बातें सुनने पर नागमल्ल को लगा कि उसे राजा दुर्मुख के पक्ष का समर्थन करना उचित है। इसमें जरा भी शक नहीं है कि राजा दुर्मुख की रक्षा करने के लिए मांत्रिक और राक्षस जैसे लोग तैयार बैठे हैं तो वह ज़रूर फिर से उदयगिरि के राज्य का राजा बन सकता है।

यों सोचकर नागमल्ल अपने दोनों अनुचरों की ओर मुड़कर बोला–"अबे सुनो, आज से हमें जंगलों को छानने के काम से छुट्टी मिल जाएगी। हम लोग अगर राजा दुर्मुख के पक्ष में रहकर दुश्मन का संहार करेंगे तो वे विजयी होने के बाद हमें मोटी तनख्वाह देकर अपनी सेना में नौकरी ज़रूर देंगे।"

अपने नेता के मुंह से यह खबर सुन कर दोनों डाकू अपनी तलवारें उठाकर चिल्ला उठे–"महाराजा दुर्मुख की जय!" फिर जलनेवाले क़िले के दर्वाजों की लकड़ी के टुकड़ों को अपनी तलवारों से अगल-बगल हटाते हुए अन्दर जाने के लिए रास्ता बनाने लगे।

भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा अपने वाहनों पर सवार हुए और बधिक भल्लूक से बोले–"हम लोग कुल मिलाकर दस आदमी भी नहीं हैं। हमारा मुख्य कार्य माया मर्कट के रूप में स्थित व्यक्ति से

मंत्र दण्ड को हथियाना है। इसके बाद राजा दुर्मुख के प्राणों की रक्षा करनी है। इस वास्ते तुम लोगों में से प्रत्येक को अपने साहस और त्याग का परिचय देना होगा।"

सब ने हथियार उठाकर नारे लगाये–"कालीवर्मा की जय!"

कालीवर्मा घोड़े पर सवार हो आगे रह कर क़िले के भीतर बढ़ने लगा। हठात् किसी बात की याद करके घोड़े को पीछे घुमाकर बोला–"राक्षस उग्रदण्ड कहाँ पर है?"

उस वक़्त उग्रदण्ड एक हाथी की सूंड पकड़कर चलते हुए दूर पर खड़े राजा

राक्षस शायद कालीवर्मा साहब पर धोखे से टूट न पड़े, हम सावधान होकर हाथियों समेत उनकी रक्षा के लिए पीछे-पीछे चलेंगे।" इन शब्दों के साथ उसने एक जंगली व्यक्ति को आदेश दिया और तब अपने हाथी को कालीवर्मा के घोड़े के पीछे बढ़ाया।

घोड़े पर कालीवर्मा तथा हाथियों पर बधिक भल्लूक तथा अंग रक्षकों को उसकी ओर बढ़ते देख राक्षस उग्रदण्ड पल भर के लिए चकित रह गया, फिर सावधानी के हेतु अपने पत्थरवाले गदे को ऊपर उठाया, हाथी की सूंड पकड़कर खींचते हुए उनकी ओर घुमाकर तनकर खड़ा हो गया।

कालीवर्मा उग्रदण्ड के समीप पहुँचते ही बोला—"उग्रदण्ड, यह क्या है? हमने सोचा था कि तुम हमारे साथ क़िले में चलकर सामंत भूपति से राजा दुर्मुख की रक्षा करोगे?"

"कालीवर्मा, क्या तुम्हारा विश्वास है कि अभी तक राजा दुर्मुख जिंदा है?" उग्रदण्ड ने पूछा।

"तुम्हारे मन में यह संदेह ही क्यों पैदा हुआ कि दुर्मुख अपने प्राण अब तक खो बैठा होगा? क्या तुम नहीं जानते कि क़िले के भीतर कुछ सैनिक दुर्मुख की ओर से भी लड़ते हैं? ऐसी बात अगर

जितकेतु के मंत्री जीवगुप्त की ओर बढ़ रहा था। इसे देख कालीवर्मा विस्मय में आ गया और भल्लूक मांत्रिक से बोला—"गुरुजी! ऐसा लगता है कि यह राक्षस हमारे दुश्मन जितकेतु के पक्ष में मिलने जा रहा है।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। मुझे मालूम हुआ कि मेरे साथ उसका अपना कोई व्यक्तिगत काम है। तुम तुरंत जाकर उसे फुसला करके पता लगाओ कि आखिर बात क्या है?" भल्लूक मांत्रिक ने सुझाया।

ये बातें सुनते ही बधिक भल्लूक एक दूसरे हाथी पर सवार राजा दुर्मुख के अंग रक्षकों से बोला—"अरे अंग रक्षको! वह

नहीं है तो युद्ध का यह कोलाहल ही हमें क्यों सुनाई देता?"

राक्षस उग्रदण्ड दूर पर खड़े मंत्री जीवगुप्त के सैनिकों की ओर हाथ का इशारा करते बोला—"कालीवर्मा, तुम सब क़िले के दर्वाजे पर नाहक़ बातें बनाते हुए वक़्त बरबाद करते हो? अब भी कोई बात नहीं, तुम लोग जल्दी क़िले के भीतर घुस आओ और राजा दुर्मुख की रक्षा करने के साथ माया मर्कट से मंत्र दण्ड को प्राप्त कर लो।"

"हम तो यही काम करने जा रहे हैं। मगर तुम इस हाथी को लेकर जाते कहाँ हो?" कालीवर्मा ने पूछा।

राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाले गदे को जीवगुप्त की ओर हिलाकर बोला—"मंत्री जीवगुप्त और उसके सैनिक पीछे से क़िले में घुसकर तुम लोगों का अंत करने से मैं उन्हें रोकने जा रहा हूँ।"

ये बातें सुन कालीवर्मा संतुष्ट हुआ और बधिक भल्लूक आदि के साथ वह क़िले के दर्वाजे के पास लौट आया। इसके बाद सब भयंकर ध्वनि करते दुर्ग में पहुँचे। दो हाथियों पर तलवार और परसे लेकर कुछ लोग सवार हुए, लेकिन एक घोड़े पर कालीवर्मा, भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक और उनके पीछे हंगामा करते

डाकू नागमल्ल और उसके अनुचरों को क़िले में प्रवेश करते देख सामंत के सैनिक भय कंपित हो उठे और घबराकर सूर्य भूपति से बोले—"महाराज, भल्लूक मांत्रिक हाथियों के दल के साथ प्रवेश कर रहा है। फिलहाल यहाँ से हमारा भाग जाना उचित होगा।"

दूसरे ही क्षण एक छोटी-सी इमारत के पीछे से सामंत सूर्य भूपति खून से सनी तलवार के साथ आगे बढ़कर बोला—"अरे सैनिको, तुम लोग डरो मत! दुर्मुख के पक्ष में लड़नेवाले सभी लोगों को लगभग हमने मार डाला है। यह भल्लूक मांत्रिक हमारा क्या बिगाड़ सकता है? मर्कट के

रूप में हमारे पक्ष में लड़नेवाला व्यक्ति भल्लूक मांत्रिक से भी ज्यादा मंत्र-शक्तियाँ रखता है ।"

सामंत को देखते ही कालीवर्मा दांत भींचते ललकार उठा—"अरे कायर सामंत, तुम क्या बंदरों की मदद से लड़ाई जीतना चाहते हो? राजा दुर्मुख कहाँ है? जल्दी बताओ! मैं उसी के हाथों से खुद तुम्हारा सर कटवाने जा रहा हूँ!"

उसी वक़्त उस इमारत की छोटी दीवार पर माया मर्कट उछलकर आ बैठा और किचकिच करने लगा। सब ने सर उठाकर उसकी ओर देखा। मर्कट के दायें हाथ में मंत्र दण्ड झूल रहा था। बायें हाथ में एक कटे सिर के केश पकड़कर हिलाते हुए बोला—"हे कालीवर्मा! तुमने राजा दुर्मुख का पता पूछा था न? लो, यही उसका कटा हुआ सिर है। तुम जब तक उसके धड़ की खोज करोगे, तब तक तुम्हारा सिर भी इसी प्रकार सूर्य भूपति की तलवार से कटकर जमीन पर लोट जाएगा।"

दूसरे ही क्षण भल्लूक मांत्रिक तलवार खींचकर अपने भैंसे के वाहन को आगे बढ़ाते बोला—"अरे मर्कट के रूप में स्थित दुष्ट भ्रांतिमति! तुम यह सोचकर खुश न हो जाओ कि तुमने मेरे मंत्र दण्ड को चुरा लिया है। यह खड्ग किसी भी हालत में उसकी तुलना में कम नहीं है। क्या तुम्हारे गुरु तांत्रिक मिथ्या मिश्र भी ब्रह्मपुत्र नदी के प्रदेश को छोड़ इन जंगलों की खाक छान रहे हैं?"

इन बातों के उत्तर के रूप में माया मर्कट परिहासपूर्वक किचकिच करके बोला—"अरे भल्लूक मांत्रिक! तुम क्या अपनी मंत्र शक्ति के बल पर अंजन लगाकर क्या मेरे गुरु का पता नहीं लगा सकते? शायद वे तुम्हारे गुरु भल्लूकपाद का सर काटने के लिए हिमशिलाओं पर अपनी तलवार को सान चढ़ाते होंगे।"

ये शब्द सुनकर भल्लूक मांत्रिक क्रोध के मारे कांप उठा, दांत पीसते बोला–"हे मेरे शिष्य कालीवर्मा! बधिक भल्लूक, तुम लोग ऐसा पहरा बिठा दो जिससे इस क़िले में से सामंत के पक्ष का एक भी सैनिक अपनी जान बचाकर भागने न पावे, हो सके तो इस माया मर्कट तथा सामंत को प्राणों के साथ बन्दी बनाकर इनकी बोटी-बोटी काट डालो।"

मांत्रिक के मुँह से ये बातें समाप्त न हुई थीं, तभी बधिक भल्लूक के हाथी पर सवार जंगली व्यक्ति का तीर तेजी से जाकर माया मर्कट के उस हाथ पर लगा, जिसमें वह कटा सिर पकड़े हुए था। बाण के लगते ही पीड़ा के मारे माया मर्कट चीख उठा और उसके हाथ का सिर फिसलकर दूर जा गिरा।

सिर के नीचे गिरते ही दूसरे हाथी पर सवार राजा दुर्मुख के दोनों अंग रक्षक नीचे कूदकर दौड़ पड़े और उस सिर की जांच कर बोले–"यह तो राजा दुर्मुख का सर नहीं है। यह माया मर्कट हमें दगा देना चाहता है।"

दूसरे ही क्षण में बधिक भल्लूक "सिरस भैरव!" चिल्लाकर परसा उठाते हुए बोला–"अरे जंगली सेवक! तुमने माया मर्कट पर तीर चलाकर अद्भुत कार्य कर

डाला। हम लोग राजा दुर्मुख की खोज करने इस सारे क़िले को छानने जा रहे हैं। जो लोग मेरे परसु की बलि न होंगे, उन्हें तुम अपने बाणों से मारकर परलोक में भेज दो।" यों सचेत कर उसने हाथी के मस्तक पर परसे की मूठ से मारा।

हाथी जोर से घींकार कर उठा। इस बीच माया मर्कट छोटी दीवार पर से कूदकर कहीं गायब हो गया। इस पर कालीवर्मा भल्लूक मांत्रिक से बोला–"गुरुजी! हमें सबसे पहले सामंत सूर्य भूपति और उसके सैनिक को मार भगाना होगा। मेरा विश्वास है कि राजा दुर्मुख इस क़िले में कहीं प्राणों के साथ जरूर होगा।"

"हे मेरे भल्लूक पाद गुरु!" चिल्लाते हुए भल्लूक मांत्रिक ने अपनी तलवार उठाई, तब ललकारा–"अरे, सुनो! राजा दुर्मुख का साथ देनेवाले सभी सैनिको, तुम लोग हमारे साथ हो जाओ। जो हमारा सामना करेंगे, उन्हें मेरी तलवार की बलि चढ़ा दूंगा।"

तब तक सामंत के सैनिकों से भगाये जाकर इधर-उधर छिपे बैठे राजा दुर्मुख के सैनिक मांत्रिक के पास दौड़े-दौड़े आ पहुँचे और बोले–"महाशय! हमारे राजा दुश्मन से डरकर सभा मण्डप के सिंहासन वाले कमरे में छिपे बैठे हैं।"

"तब तो तुम लोग आगे-आगे चलते रास्ता बता दो, तुम्हें प्राणों का कोई डर नहीं है। दुश्मन की बात हम देख लेंगे।" कालीवर्मा ने हिम्मत बंधाई।

कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक सभा मण्डप की ओर बढ़े, पर रास्ते में उन्हें एक भी दुश्मन दिखाई नहीं दिया। वे सब क़िले के दूसरे हिस्से में पहुँचकर सामंत और माया मर्कट के साथ यह मंत्रणा कर रहे थे कि आगे क्या किया जाय?

कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक सभा मण्डप के समीप पहुँचने जा रहे थे, तभी बधिक भल्लूक हाथी पर वहाँ आ पहुँचा। इसके दूसरे ही क्षण सभा मण्डप में सिंहासनवाले कमरे के द्वार खुल गये। सबने आश्चर्य के साथ देखा कि राजा दुर्मुख सिंहासन पर बैठा हुआ है।

सभी लोग चकित थे, तभी राजा दुर्मुख अपना हाथ उठाकर बोला–"हे बधिक भल्लूक! फिर से एक बार अपने सिंहासन पर बैठने की मेरी इच्छा की पूर्ति हो गई। तुम अब बिना किसी विघ्न के मेरा सर काटकर अपने गुरु के हाथ में सौंप सकते हो। मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक उत्साह के साथ अपना परसु उठाकर हाथी पर से कूद पड़ा और सभा मण्डप की ओर दौड़ पड़ा।

(और है)

दिव्य ज्ञान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा– "राजन, मनुष्य अज्ञानी तो हैं ही, साथ ही वे पूर्णज्ञान का आदर भी नहीं कर पाते हैं। इसके उदाहरण स्वरूप में आप को वह कथा सुनाऊँगा जिसमें दिव्य ज्ञानी के प्रति अन्याय हुआ था। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: कांचनपुर पर जिन दिनों में दिवाकर नामक राजा शासन करते थे, उन दिनों में उस नगर में एक साधू आये और उन्होंने नगर के बाहर के एक वन में अपनी कुटी बना ली। यह खबर मिलते ही नगर की जनता ने उनकी सलाह माँगी। साधू ने हर एक व्यक्ति को बताया कि प्रत्येक व्यक्ति की

बेताल कथाएँ

कठिनाइयाँ कब और कैसे दूर होंगी। उनकी सारी बातें सच निकलीं, इस कारण सब ने उन्हें दिव्य ज्ञानी बताया।

दिव्य ज्ञानी का समाचार आखिर राजा तक पहुँचा। लेकिन राजा दिवाकर का विश्वास था कि प्रत्येक की क़िस्मत में जो कुछ बदा है, वही होगा। उसे बदलना किसी के लिए मुमक़िन नहीं है। ऐसी हालत में दिव्य ज्ञानी के द्वारा भविष्य जानने से जो होनेवाला है, वह होकर ही रहेगा, तब उसे जानकर फ़ायदा ही क्या है?

मगर राजा दिवाकर के मंत्री सुदर्शन को लगा कि भविष्य की बातें जानने से जरूर लाभ होगा। सुदर्शन का पुत्र जन्म से ही बीमार था। सभी वैद्य प्रयत्न करके भी उसका इलाज नहीं कर पाये। इस पर मंत्री के मन में यह आशा जगी कि कहीं दिव्य ज्ञानी उसके बेटे को निरोग बनाने में सहायता कर सके। मंत्री के मुँह से सारी बातें सुनकर दिव्य ज्ञानी ने कहा–"तुम्हारा बेटा ग्रह-दोष से पीड़ित है। मेरे सुझाव के अनुसार ग्रह-शांति करवा दो, लड़का ज़रूर स्वस्थ हो जाएगा।"

दिव्य ज्ञानी के कहे मुताबिक़ मंत्री सुदर्शन ने शांति करवाई। इस पर उसका पुत्र एक महीने के अन्दर पूर्ण स्वस्थ हो गया। सुदर्शन बहुत प्रसन्न हुआ और उसने दिव्य ज्ञानी को उपहार देना चाहा।

"मंत्री महोदय, मैंने सर्वस्व को त्याग दिया है, ऐसी हालत में ये भेंट-पुरस्कार मैं स्वीकार नहीं करूँगा।" इन शब्दों के साथ मंत्री के हाथ एक औषध दिया और समझाया कि अगर किसी को नाग डसता है, इसके जरिये जिला सकते हो।

साँप का ख़तरा किसे होगा, यही सोचते मंत्री अपने घर चला गया। दूसरे दिन सवेरे धुंधली रोशनी में मंत्री ने नाग पर अपना पैर रखा, नाग ने उसे डस लिया। इस पर दिव्य ज्ञानी के औषध ने उसके प्राणों की रक्षा की।

यह खबर मिलने पर राजा के मन में दिव्य ज्ञानी के प्रति कुतूहल पैदा हुआ। राजा सोचने लगे, दिव्य ज्ञानी भविष्य को जानने के साथ उसे बदल भी सकते हैं? इस शंका का निवारण करने के ख्याल से राजा दिवाकर एक दिन शिकार खेलने जाते हुए दिव्य ज्ञानी की कुटी के पास पहुँचे। उनके दर्शन करके पूछा–"महात्मा, मैं शिकार खेलने जा रहा हूँ। आज का शिकार कैसा चलेगा?"

"आज आप एक भी जानवर का शिकार नहीं कर पायेंगे।" दिव्य ज्ञानी ने बताया।

राजा तो शिकार खेलने जाकर कभी खाली हाथ न लौटे थे। राजा यह सोचते जंगल की ओर बढ़े–"यह दिव्य ज्ञानी भविष्य का भी अच्छा ज्ञान नहीं रखते।" पर दिव्य ज्ञानी की बातें सच्ची साबित हुईं। उस दिन राजा एक खरगोश तक का शिकार न कर पाये।

इस घटना के थोड़े दिन बाद दिवाकर का पड़ोसी देश के राजा के साथ युद्ध छिड़ गया। पड़ोसी राजा शक्तिशाली था, इसलिए राजा दिवाकर दिव्य ज्ञानी की सलाह लेने उनकी कुटी पर पहुँचे, दिव्य ज्ञानी ने बताया–"महाराज! आप हिम्मत के साथ युद्ध कीजिए। आसानी से आप को विजय प्राप्त होगी।"

इस बार भी दिव्य ज्ञानी का ज्योतिष सच्चा साबित हुआ। अपने को शक्तिशाली राजा मानकर इस अहंकार के कारण पड़ोसी राजा ने व्यूह-रचना में असावधानी दिखाई, परिणाम स्वरूप कुछ ही घड़ियों में आघातों का शिकार हो भाग गया।

इसके बाद राजा और मंत्री के बीच दिव्य ज्ञानी के बारे में चर्चा हुई।

राजा ने कहा–"दिव्य ज्ञानी भविष्य को जानते हैं, पर उसे बदलने की शक्ति वे नहीं रखते। तुम्हारे पुत्र को स्वस्थ बनाया और तुम्हें साँप के डसने के खतरे से बचाया। इसलिए तुम समझते हो कि दिव्य ज्ञानी भविष्य को बदलने की शक्ति

रखते हैं। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि वे कई लोगों को यह बता रहे हैं कि अनेक लोगों की बीमारियाँ दूर नहीं होंगी; उन्हें पराजय भी निश्चित है। वे पहले ही जानते थे कि तुम्हारे पुत्र की बीमारी दूर होगी और साँप के डसने से तुम्हारे प्राणों के लिए कोई खतरा न होगा।"

राजा के मुँह से ये बातें सुनने के बाद मंत्री ने बड़ी लगन के साथ इन बातों की जानकारी हासिल करने का प्रयत्न किया। आखिर उसे राजा की बातें सही मालूम हुईं। क्यों कि दिव्य ज्ञानी कुछ लोगों को बता रहे हैं कि उन्हें कठिनाइयाँ किस रूप में आती हैं, कुछ लोगों को बता रहे हैं कि उनके प्रयत्न सफल न होंगे! कुछ लोगों को भविष्य में होनेवाले हित का परिचय करा रहे हैं, पर दिव्य ज्ञानी की बातों के आधार पर जो लोग पहले ही यह जान लेते हैं कि उनके प्रयत्न सफल न होंगे, उस संबंध में प्रयत्न करना ही बंद कर रहे हैं और जो यह जान लेते हैं कि उनकी भलाई होनेवाली है, वे निश्चित हो हाथ बांधे बैठ रहे हैं।

ये सारे विवरण जानने के बाद एक दिन रात को मंत्री सुदर्शन अपने दो विश्वासपात्र अनुचरों को साथ ले दिव्य ज्ञानी की कुटी में पहुँचा। दिव्य ज्ञानी को नींद से जगाकर अपने एक अनुचर के साथ रथ पर उन्हें दूर के देश में भेज दिया और दूसरे अनुचर को दिव्य ज्ञानी का वेष धरवाकर उस कुटी में बिठा दिया।

दूसरे दिन से दिव्य ज्ञानी जनता को जो भविष्य बताने लगा, वह सच्चा साबित न हुआ। जनता ने यह सोचकर दिव्य ज्ञानी के यहाँ सलाह लेने जाना बंद किया कि उनकी शक्तियाँ जाती रही हैं। थोड़े दिन बाद मंत्री का वह अनुचर उस कुटी को छोड़ मंत्री के पास लौट आया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, दिव्य ज्ञानी ने मंत्री का बड़ा उपकार किया था, साथ ही जनता को

कठिनाइयों से बचाता रहा। ऐसे दिव्य ज्ञानी को मंत्री ने क्यों दूर के देश में भेज दिया? उनके द्वारा कभी किसी की कोई हानि नहीं हुई थी न? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "यदि दिव्य ज्ञानी सचमुच भविष्य को बदलनेवाले हैं तो उनके द्वारा जनता व देश का जरूर लाभ होता, परंतु राजा के द्वारा साबित करने के अनुसार दिव्य ज्ञानी केवल भविष्य का ही ज्ञान रखते हैं, तो उसके द्वारा देश और जनता का अपार अहित ही होगा। जब स्पष्ट रूप से किसी का भविष्य मालूम हो जाता है, तब वे लोग भविष्य में कुछ पाने का प्रयत्न नहीं करते। प्रयत्न ही मानव जाति को आगे ले जाता है। ज्ञान की वृद्धि के लिए असफल प्रयत्न भी अत्यंत सहायक होते हैं। शिक्षा देनेवाले गुरु भी अपने शिष्यों को भूलें करने का मौक़ा देकर उन भूलों के द्वारा उनकी ज्ञान-वृद्धि के लिए रास्ता खोल देते हैं। यों ही पढ़ाकर भेज देनेवाले गुरु अपने शिष्यों को सही ढंग से पूर्ण शिक्षित नहीं बना सकते। जनता की भी यही बात है। यदि उनके प्रयत्नों का फल उन्हें पहले ही मालूम हो जाता है, तो वे बिलकुल प्रयत्न नहीं करेंगे। जब उन्हें विश्वस्त रूप से मालूम हो जाता है कि उनकी भलाई होनेवाली है, तब वे प्रयत्न ही क्यों करेंगे? वे लोग बिलकुल आलसी और जंतु-प्रकृति के हो जाते हैं। ऐसे ही विश्वस्त रूप से भविष्य के फल का पता लगने पर वे अपने प्रयत्न बंद कर देते हैं। यह देश के लिए अत्यंत हानिकारक है। यही सब विचार करके मंत्री ने दिव्य ज्ञानी को अपने देश से भिजवा दिया है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)
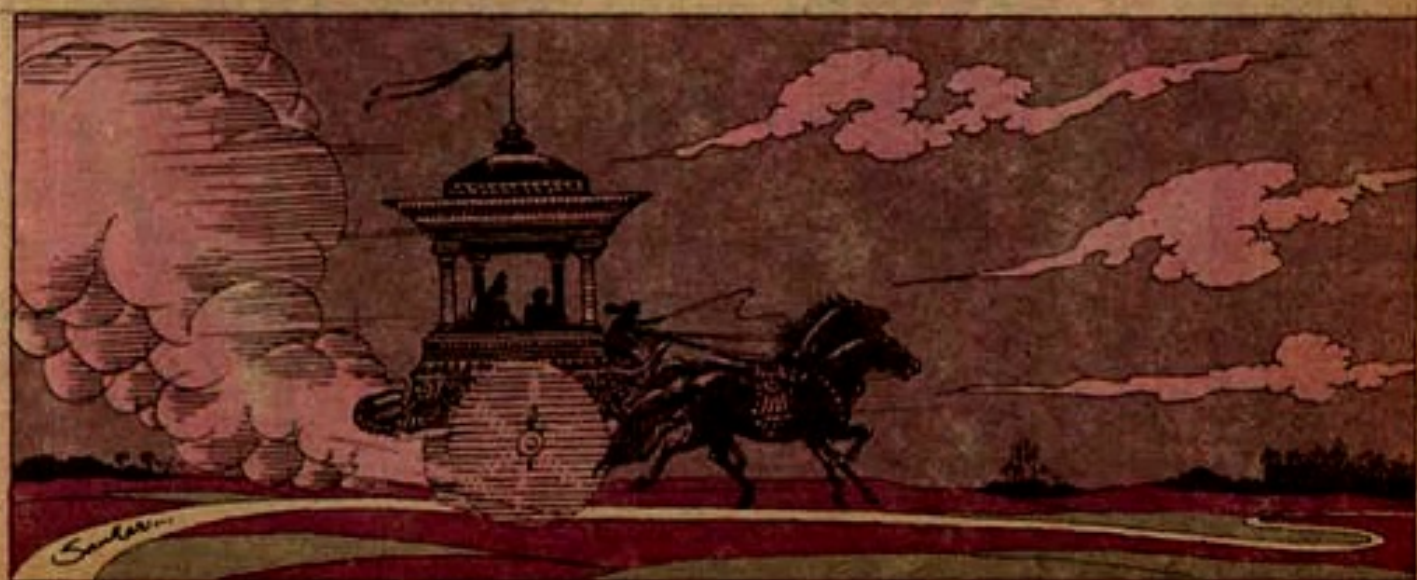
वंश और गुण

कई सौ साल पहले सिंधु देश में सोमनाथ नामक एक ब्राह्मण रहा करता था। उसके वज्रनाभ नामक एक पुत्र था। वज्रनाभ ने एक मछुआरे की कन्या से प्यार किया। वस्त्र-धारण को छोड़ बाक़ी सभी बातों में वह उच्च वर्ण की कन्या जैसी लगती थी।

मगर सोमनाथ को यह बात मालूम हो जाय कि वज्रनाभ एक मछुआरे की कन्या के साथ विवाह करना चाहता है, तो वह नहीं मानेगा। इसलिए वज्रनाभ ने अपने एक दोस्त की सलाह माँगी। दोस्त ने सलाह दी–"तुम उस कन्या को अच्छे वस्त्र पहना दो, तुम्हारे पिता से कह दो कि वह एक ब्राह्मण कन्या है और उसके साथ तुम शादी करना चाहते हो, तब वे मान लेंगे। शादी के बाद असली बात मालूम हो जाएगी तो कोई बात नहीं।"

वज्रनाभ ने उस कन्या को अच्छे वस्त्र पहनवा दिये और उसे अपने पिता के पास ले जाकर बोला–"पिताजी, यह एक ब्राह्मण कन्या है, मैं इसके साथ शादी करना चाहता हूँ।"

इस पर वह कन्या घबरा गई और बोली–"महानुभाव! यह तो सफ़ेद झूठ है। मैं ब्राह्मण कन्या नहीं हूँ, मैं मछुआरे की कन्या हूँ।" दूसरे ही क्षण सोमनाथ ने अपने बेटे के गाल पर खींचकर थप्पड़ लगाया और कहा–"अरे, झूठ बोलने में तुम्हें लज्जा नहीं आई? ऐसी ईमानदार लड़की मेरी बहू बन जाय तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन तुम इस बात का पता लगाओ कि वह कन्या तुम जैसे झूठ बोलनेवाले के साथ शादी करेगी या नहीं।"

पड़ोसी की नक़ल

जानकी और पार्वती अड़ोस-पड़ोस की गृहिणियाँ हैं। पार्वती बड़ी बुद्धिमती है और किफ़ायत के साथ अपनी गृहस्थी को चलाते सुखपूर्वक दिन बिता रही है। लेकिन जानकी ईर्ष्यालू है। वह पार्वती से बढ़कर वैभवपूर्वक ज़िंदगी बिताना चाहती है। इस वास्ते वह क़ीमती सामान ख़रीदकर अपने घर को सजाती, फिर भी पार्वती बुद्धिमती थी, इस कारण उसका मकान ज़्यादा सुंदर और अलंकृत दीखता था।

इस पर जानकी ईर्ष्या से भर उठी और उसने अपने पति से इसका उपाय पूछा। जानकी का पति उसके इस व्यवहार से पहले ही खीझा हुआ था, बोला–"तुम अपने पड़ोसियों से ज़्यादा वैभव दिखाने के घमण्ड में आकर मेरे सिर पर कर्ज का बोझा डाल देती हो? आइंदा तुम कुछ मत ख़रीदो! पड़ोसियों के द्वारा किसी चीज़ के ख़रीदने तक तुम सब्र करो और बाद को तुम भी वही चीज़ ख़रीद लो।"

अपने पति की सलाह का जब से जानकी पालन करने लगी, तब से उसके मन को शांति मिलने लगी।

जानकी और पार्वती दोनों के कोई संतान न थी। उन्हें एक दिन मालूम हुआ कि उनके गाँव में कोई साधू आये हुए हैं और सब को ऐसे आशीर्वाद देते हैं जिससे उन सब की सहज इच्छाओं की पूर्ति हो रही है। यह बात मालूम होने पर पार्वती साधू के दर्शन करने गई। पार्वती के जाने का समाचार मिलते ही जानकी भी उसके पीछे साधू से मिलने गई। दोनों ने साधू की पूजा की। साधू दोनों को एक मंत्र सुनाकर बोले–"तुम दोनों इस मंत्र का जाप करोगी तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी।"

सरोजा निगम

इसके बाद दोनों अपने घर लौट आईं। पार्वती अपने लिए एक सुंदर पुत्र की कामना करते मंत्र जापने लगी।

अब जानकी के सामने एक बड़ी उलझन पैदा हुई। क्यों कि वह यह नहीं जानती थी कि पार्वती मंत्र जपकर किस चीज की कामना करती है। पर वह सिर्फ़ यही जानती थी कि वह भी पार्वती के समान ज़िंदगी बिता दे। यही सलाह उसके पति ने भी दी थी। इसलिए उसने यही कामना करते मंत्र जापना शुरू किया कि पार्वती के प्रति जो कुछ होवे, वही उसके साथ भी हो जावे।

थोड़े महीनों के बाद पार्वती के एक सुंदर लड़का पैदा हुआ। शायद मंत्र के प्रभाव से ही सही जानकी के गर्भ से भी एक सुंदर बच्चे का जन्म हुआ। यह बात मालूम होने पर जानकी का पति बड़ा खुश हुआ कि जानकी ने किस बुद्धिमत्ता के साथ मंत्र का उपयोग किया है। मगर जानकी ने अपने पति की सलाह पर ऐसा किया था, इस वजह से उसने अपने पति की बड़ी तारीफ़ की।

एक दिन अचानक पार्वती के घर में चोर घुस आये और उसके घर को लूटा। उसी रात को जानकी के घर में भी चोरी हो गई। इस लूट के कारण पार्वती का ही ज्यादा नुक़सान हुआ, क्यों कि उसकी मदद करनेवाले कोई संपन्न गृहस्थ न थे। इस नुक़सान को भरने के लिए उसे कई साल लग सकते हैं, पर जानकी की बात ऐसी नहीं है। क्यों कि उसकी मदद करनेवाले कई लोग हैं। उसका जो नुक़सान हुआ है, उसे उसके रिश्तेदार मिनटों में भर सकते हैं। लेकिन शायद मंत्र के प्रभाव का कारण हो, कोई भी उसकी मदद करने आगे न आया। उसके वर का प्रभाव उल्टा हो गया। उस दिन से पार्वती जो यातनाएँ झेलती थीं, वे यातनाएँ जानकी भी खुद झेलते रोज भगवान से प्रार्थना करने लगी कि भविष्य में पार्वती को किसी प्रकार के कष्ट न होवे।

भोला आदमी

कामता प्रसाद एक भोला था। बचपन में ही उसके माँ-बाप मर गये थे। इसलिए उसकी नानी ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। वैसे वह दिल का साफ़ था, लेकिन वह व्यवहार की बातें जानता न था। इस वजह से वह हमेशा दूसरों की झिड़कियाँ खाता था।

एक वर्ष उस गाँव के सारे कुएँ सूख गये। इस कारण गाँववालों को दूर पर स्थित नदी में से पानी लाना पड़ा। एक दिन कामता प्रसाद एक गली में से गुजर रहा था, तब एक अधेड़ उम्र की औरत पानी के गगरे को बड़ी मुश्किल से ढोते हुए वहाँ आ पहुँची, एक चबूतरे पर उतारकर फिर से उसे उठाने में बड़ी मुश्किल का अनुभव कर रही थी।

कामता प्रसाद ने उसकी मदद करने के ख्याल से गगरे को उठाना चाहा।

"अरे कमबख्त! तुमने मेरा गगरा छूकर पानी को मैला कर दिया है।" यों डांटकर उस औरत ने गगरे का सारा पानी कामता के सर पर उडेल दिया और फिर से वह नदी की ओर चल पड़ी।

कामता प्रसाद भीगे कपड़ों से घर पहुँचा और नानी से गालियाँ सुनीं।

एक बार कामता प्रसाद साग-सब्जी खरीदकर घर लौट रहा था, तब उसने देखा कि कोई लड़का घबराये हुए दौड़ा-दौड़ा चला आ रहा है और उसके पीछे एक बूढ़ा हांफते हुए भागते चिल्ला रहा है–"अरे बदमाश! तुम तो चोर हो! तुम्हारी पिटाई करने से ही तुम्हारी अक़्ल ठिकाने लग जाएगी।"

कामता प्रसाद ने सोचा कि उस बूढ़े की मदद करनी चाहिए, इस अच्छे विचार से उसने लड़के को पकड़ लिया और दो-

रामामोहन गुप्त

चार चपत लगाई। तब बूढ़े से बोला–"दादाजी! आप परेशान न होइयेगा। मैंने ही इसे खूब पीटा है। आइंदा यह सही रास्ते पर आएगा।"

मार खाकर लड़का रो पड़ा।

किसी रास्ता चलनेवाले के द्वारा अपने पोते को पीटते देख बूढ़ा आदमी एक दम नाराज़ हो गया और बोला–"अबे तुम कौन हो, मेरे पोते को पीटनेवाले? आखिर इसे पीटने के लिए तुम्हारे हाथ ही कैसे उठ गये?" यों कामता को गाली देकर अपने पोते को समझा-बुझाकर घर ले गया।

इसे देख वहाँ पर कई लोग इकट्ठे हुए और सब ने कामता प्रसाद को डांट-फटकार सुनाई।

कामता प्रसाद चितापूर्ण चेहरा लेकर घर पहुँचा और सारी बातें अपनी नानी को सुनाई। नानी ने भी उसे खूब खरी-खोटी सुनाई।

एक साल नदी पर मेला लगा। कामता प्रसाद रोज़ नदी में जाता, घाट से थोड़ी दूर पर नहा लेता, किनारे अकेले ही थोड़ी देर बैठकर घर लौटता था।

एक दिन कामता प्रसाद रोज़ की भांति नहाकर किनारे बैठा था। तभी कोई दंपति उस घाट पर नहाकर किनारे आ गये। मगर वह औरत उस ऊँचे कगार पर चढ़ न पाई। उसने अपने पति का सहारा पाने के लिए हाथ बढ़ाया। पति ने उसे देखा नहीं, वह आगे बढ़ गया।

इस पर कामता प्रसाद ने झट से उस औरत का हाथ पकड़कर ऊपर खींच लिया।

पति लौट आया, उसने कामता प्रसाद की खूब पिटाई की।

कामता प्रसाद की नानी बीमार थी। मार खाकर लौटे अपने पोते को देख आँसू भरते बोली–"बेटा, तुम तो दिल के अच्छे हो, मगर मेरे मरने के बाद तुम पर रहम खानेवाले इस गाँव में कोई नहीं है। मेरे मरने के बाद तुम इस गाँव में मत रहो; और कहीं जाकर अपने दिन बिता लो। तुम जहाँ भी जाओगे, जब तक कोई तुम्हें बुलाकर मदद न माँगेंगे, तब तक तुम किसी की भी मदद न करो।"

इस घटना के थोड़े दिन बाद ही नानी मर गई। उसने नानी की अंत्येष्टि क्रियाएँ कीं, तब नानी के कहे मुताबिक़ अपनी आजीविका की खोज में चल पड़ा।

वह एक जंगल के रास्ते जा रहा था, तब रास्ते के किनारे एक उजड़े कुएँ के भीतर से ये चिल्लाहटें सुनाई दीं–"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।"

कामता प्रसाद झट उस ओर बढ़ने को हुआ, पर नानी की बातों के याद आते ही वह रुक गया। वह चिल्लानेवाला व्यक्ति यदि उसका नाम लेकर उसकी मदद नहीं माँगता है, तो उसकी मदद नहीं करनी चाहिए।

इतने में दो सिपाही उधर से आ निकले, कुएँ के भीतर से आनेवाली

चिल्लाहटें सुनीं। समीप में ही भटकनेवाले कामता प्रसाद को देख उनके मन में शंका हुई। सिपाहियों ने कामता प्रसाद को एक पेड़ से बांध दिया और कुएँ में गिरे हुए आदमी को बाहर निकला।

बाहर निकलने पर उस आदमी ने सिपाहियों से बताया–"मैं अपने व्यापार के काम से शहर जा रहा था, तब मुझे प्यास लगी, मैंने इस ख्याल से इस कुएँ के भीतर झांककर देखा कि कहीं इसमें पानी हो तो अपनी प्यास बुझा लूँ, लेकिन इस बीच किसी कमबख्त चोर ने झट से मेरे हाथ की थैली खींच ली और मुझे कुएँ में ढकेल दिया। कुएँ में ज्यादा पानी न था, इसलिए मैं बच गया।"

"तुम को कुएँ में ढकेलनेवाला दुष्ट यही होगा।" यों समझाते हुए सिपाहियों ने उस व्यापारी को कामता प्रसाद को दिखाया।

कामता प्रसाद रोते हुए बोला–"हुजूर, मैं कुछ नहीं जानता। मैंने इन्हें बचाना चाहा, मगर बचा न पाया। इसके पीछे एक कारण है।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी सारी कहानी सुनाई।

व्यापारी को कामता प्रसाद का भोलापन मालूम हो गया। उसने सिपाहियों से कहा–"मुझे कुएँ में ढकेलनेवाला व्यक्ति यह नहीं है, वह बड़ा ही मोटा-तगड़ा आदमी है। मेरे कुएँ में गिरे काफ़ी देर हो गई है। मुझे ढकेलनेवाला आदमी अभी तक यहाँ पर क्यों कर रहेगा?"

"तब तो हम असली चोर को पकड़ लेंगे।" यों कहकर सिपाही चले गये।

इसके बाद व्यापारी ने कामता प्रसाद को समझाया–"बेटा, तुम और कहीं भी जी नहीं सकते। मेरे साथ चलो, मेरे बगीचे की देखभाल करते वहीं पर रह जाओ। तुम्हें कोई छेड़ेगा नहीं। अबोध पौधे तुम्हारी कोई हानि न करेंगे। तुम्हारी आजीविका का इंतजाम मैं कर देता हूँ।"

ये बातें सुन कामता प्रसाद ने खुशी से व्यापारी के घर रहने को मान लिया और उसके साथ चल पड़ा।

दधीची

दधीची च्यवन के पुत्र थे। एक बार वे स्वततीर्थ में तपस्या कर रहे थे, तब इंद्र यह सोचकर डर गये कि दधीची कहीं अपने तपोबल से उनका स्थान प्राप्त कर ले, इसलिए दधीची का तपोभंग करने के लिए इन्द्र ने अलंबुसा नामक अप्सरा को उनके पास भेजा।

विचित्र बात तो यह थी कि इंद्र ने अपनी जाति के "नौ नब्बों" का वध करके देवताओं पर इंद्रत्व प्राप्त कर लिया था। इंद्र का यह भय था कि सौ यज्ञ करनेवाला कोई भी व्यक्ति इन्द्र पद को प्राप्त कर लेगा। इसी डर से उन्होंने कई ऋषियों की तपस्या भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा और वे उसमें बहुत अंशों तक सफल भी हुए।

यह मानना होगा कि दधीची के विषय में भी इंद्र सफल हो गये हैं। क्योंकि अलंबुसा ने दधीची की तपस्या को न केवल भंग किया, बल्कि उनके द्वारा सारस्वत नामक पुत्र का भी जन्म दिया।

फिर भी दधीची महान तपस्वी थे। जब इंद्र का पद एक हज़ार वर्षों के लिए खाली हुआ, तब उस अवधि में दधीची ने इंद्र पद को संभाला। उसी समय में दक्ष और दक्ष के जामाता शिवजी के बीच झगड़ा पैदा हुआ। एक बार ब्रह्मा के द्वारा किये जानेवाले यज्ञ में दक्ष पहुँचे, उनके आगमन पर वहाँ पर उपस्थित सभी लोग उठ खड़े हुए, पर शिवजी उठे नहीं। इस कारण दक्ष को क्रोध आया, मगर दक्ष ने इसी क्रोध के कारण अपने यज्ञ के समय अपनी पुत्री सती को, जो शिवजी की पत्नी थी, निमंत्रण न भेजा। फिर भी सती बिना बुलाये मेहमान बनकर दक्ष के यज्ञ में पहुँचीं, अपने पिता के द्वारा

अपमानित हो अग्नि में कूदकर आत्महत्या कर ली। यह समाचार मिलते ही शिवजी क्रोध में आ गये, वीर भद्र की सृष्टि करके उसके नेतृत्व में प्रमद गणों को दक्षवाटिका में भेजकर यज्ञ को ध्वंस कराया। उस वक्त दक्ष का सर कट गया। इस पर देवताओं ने दक्ष के धड़ पर भेड़ का सिर चिपकाकर उन्हें मृत्यु से बचाया।

दक्ष और शिवजी के बीच यह जो वैर हुआ, उस समय अकेले दधीची ने ही शिवजी के पक्ष का समर्थन किया, क्यों कि वे शिव भक्त थे।

दधीची की पत्नी का नाम लोपामुद्रा है। देवता इस डर से अपने सारे अस्त्र दधीची के यहाँ छिपाया रखते थे ताकि उन्हें राक्षस उठाकर न ले जायें। लेकिन वे बहुत समय तक अपने अस्त्र ले जाने के लिए लौटे नहीं, इस बीच दधीची वे अस्त्र खो बैठे। पर जब देवताओं ने आकर अपने अस्त्र माँगे, तब दधीची ने बताया— "मैं आप लोगों के अस्त्र लौटा नहीं सकता, उन्हें मैंने निगल डाले हैं।" इस पर देवताओं ने दधीची पर जोर डाला— "आप को हमारे अस्त्र लौटाने होंगे।"

"आप लोगों के अस्त्र मेरी हड्डियों में मिल गये हैं। इसलिए आप मेरी हड्डियाँ लेकर उन्हें आयुधों के रूप में इस्तेमाल कीजिए।" दधीची ने समझाया।

"जब आप जिंदा हैं, तब हम आप की हड्डियों को आयुधों के रूप में कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं?" देवताओं ने पूछा।

उस वक्त दधीची ने अपने तपोबल से अग्नि पैदा कर दी और उसमें वे भस्म हो गये। उनकी हड्डियों से ब्रह्मा ने चक्र, वज्रायुध तथा अन्य आयुधों की सृष्टि की।

कहा जाता है कि दधीची की हड्डियों से केवल वज्रायुध ही तैयार किया गया है। वह इंद्र का शक्तिशाली अस्त्र है। इसी से इंद्र ने वृत्तासुर का संहार किया था।

दधीची की मृत्यु के समय लोपामुद्रा गर्भवती थी और बाद को उन्होंने पिप्पलाद का जन्म दिया था।

कुमारस्वामी

शिवजी के द्वारा गर्भवती होनेवाली पार्वती ने अपने गर्भ को अग्नि के द्वारा धारण करवाया। अग्नि ने उसे गंगा के रूप में बदल डाला। गंगा ने उसे नदी के किनारे की दूब में छोड़ दिया। वहीं पर कुमारस्वामी का जन्म हुआ।

कहा जाता है कि यों दूब में पैदा हुए शिशु को छे कृत्तिकाओं ने दूध देकर पाला था। इसीलिए कुमार स्वामी के छे मुख हो गये और उनका नाम कार्तिकेय पड़ा। यह भी कहा जाता है कि सप्तर्षियों की पत्नियों में वसिष्ठ की पत्नी अरुंधती को छोड़ बाक़ी छठों ने कुमारस्वामी को पाला था। वे ही कृत्तिकाएँ हैं।

यह भी कहा जाता है कि कुमारस्वामी का जब जन्म हुआ था, उस वक़्त उसके समीप में शिवजी का वह धनुष, जिससे त्रिपुरासुरों का वध किया गया था, पड़ा हुआ था। कुमारस्वामी ने जब उसकी डोरी को पकड़कर खींचा, तब बड़ी भारी आवाज़ हुई थी। उस वक़्त दो दिग्गज कुमारस्वामी पर गिर पड़े। उस शिशु ने उन्हें गेंदों की भांति उछालकर खेलते हुए किलकारे किये थे।

कुमारस्वामी के पैदा होने पर ब्रह्मा ने उसे पार्वती और परमेश्वर को दिखाकर कहा था—"ये ही तुम्हारे माता-पिता हैं।" इंद्र ने ऐरावत हाथी के दो घंटे लाकर कुमारस्वामी को पुरस्कार के रूप में दिये थे।

कुमारस्वामी के जन्म के समय सारे विश्व में कोलाहल मच गया। उस कोलाहल के साथ कुमारस्वामी के दर्प को देख देवता और मुनि भी डरकर इंद्र के पास पहुँचे और उन्हें सलाह दी—"यह कुमार आप को पराजित कर इंद्र बन

जायेंगे। इसलिए आप अभी इसे मार डालिये।" पर एक कहानी यों कही जाती है कि इन्द्र ने सप्त माताओं को बुलवाकर कुमारस्वामी का वध करने भेजा, लेकिन उन लोगों ने ऐसा न किया, उल्टे वे कुमारस्वामी की माताओं के रूप में रहने को तैयार हो गईं। कहा जाता है कि कुमारस्वामी ने उन्हें बालग्रह बना दिये थे।

इंद्र जब सप्त माताओं के द्वारा कुमार स्वामी का वध न करा पाये, तब उन पर हमला करके अपने वज्रायुध का प्रयोग किया। वह आयुध कुमारस्वामी के दाहिने हिस्से में जा लगा और उसमें से बकरी के मुखवाला विशाख पैदा हुआ। विशाख के साथ अनेक कन्या-कुमार गण भी पैदा हुए। उन्हें देख इंद्र डर गये और कुमारस्वामी की शरण में आये।

कुमारस्वामी ने इन्द्र से पूछा—"आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"आप मेरे साथ मैत्रीभाव से रहिये; मैं आप के व्यवहार से बहुत ही प्रभावित हूँ और मेरा इन्द्र पद ले लीजिए।" इन्द्र ने जवाब दिया।

"मुझे आप के इन्द्र पद की कोई ज़रूरत नहीं है।" कुमार ने उत्तर दिया।

"तब तो आप देवताओं के सेनापति बन जाइये।" इन्द्र ने निवेदन किया।

इस पर कुमारस्वामी ने कई राक्षसों का वध किया। उनमें शूर पद्मासुर, अंधकासुर आदि अनेक हैं। क्रौंच पर्वत राक्षसों का केन्द्र था। इसलिए कुमारस्वामी ने उस पर्वत को भेद डाला।

मगर कुमारस्वामी का सब से बड़ा कार्य तारकासुर का संहार करना माना जाता है। तारकासुर ने ब्रह्मा से अनेक वर प्राप्तकर इंद्र को थर्रा दिया था। ब्रह्मा भी देवताओं की सहायता न कर पाये। यह सब कुमारस्वामी के जन्म के पहले हुआ था। मगर कुमारस्वामी के द्वारा जन्मधारण कर देवसेनाओं के अधिपति बनने तक तारकासुर का वध संभव न हो पाया था।

चन्द्रहास

केरल के राजा का एक बार शत्रुओं ने युद्ध में वध किया, उसकी रानी ने राजा के साथ सहगमन किया। उनका पुत्र चन्द्रहास उस वक्त छोटा-सा शिशु था। उसे एक दासी ने कुंतल देश पहुँचा दिया।

कुंतल राजा के कोई संतान न थी। मंत्री दुष्टबुद्धि अपने पुत्र को राजा बनाना चाहता था। उस हालत में एक दिन दरबारी ज्योतिषी ने चन्द्रहास को देख बताया–"यह बालक निश्चय ही राजा बनेगा।"

चन्द्रहास अगर जिंदा रहा, तो मंत्री का पुत्र राजा न बन सकेगा, यह सोचकर दुष्टबुद्धि ने चन्द्रहास का वध करने के लिए बधिकों को नियुक्त किया। मगर उन्हें बालक पर दया आयी और वे उसे जंगल में छोड़ कर चले आये।

उसी समय कुलिंद नामक राजा शिकार खेलने जंगल में गये और चन्द्रहास को देख अपने महल में उठा लाये। क्यों कि उनके कोई संतान न थी। वे चन्द्रहास को पालने लगे। चन्द्रहास को जीवित देख दुष्टबुद्धि ने उसे अपने परिवार में ले लिया।

दुष्टबुद्धि का पुत्र मदन एक प्रांत का राज प्रतिनिधि था। दुष्टबुद्धि ने अपने पुत्र मदन के नाम एक चिट्ठी लिखकर उसे चन्द्रहास के हाथ मदन के पास भेजा। चन्द्रहास राज प्रतिनिधि के उद्यान में पहुँचा और एक पेड़ की छाया में आराम करते सो गया।
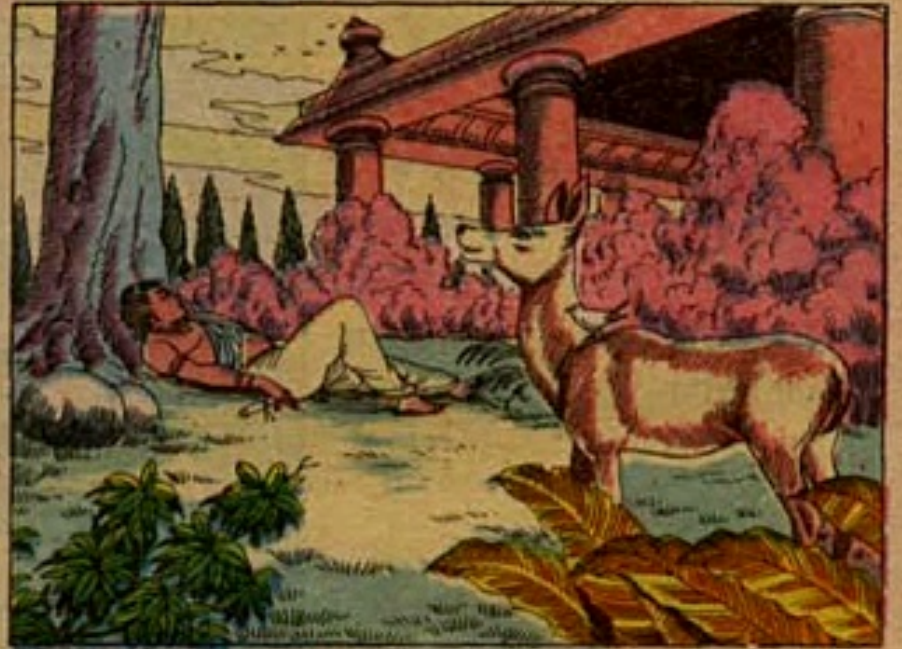
दुष्टबुद्धि की पुत्री विषया अपने भाई मदन के पास रहती थी। वह सोनेवाले चन्द्रहास को देख उस पर मोहित हो गई। चन्द्रहास के हाथ की चिट्ठी लेकर उसने पढ़ा। उसमें चन्द्रहास को विष देने के लिए लिखा था। ,उसने "विष" शब्द को "विषया" बदलकर चिट्ठी वहीं छोड़ दी।

थोड़ी देर बाद चन्द्रहास नींद से जाग उठा। वह उठकर मदन से मिला और उसके हाथ वह चिट्ठी दे दी। उसमें चन्द्रहास को विषया को देनें की बात लिखी थी। मदन ने चिट्ठी पढ़कर उन दोनों का विवाह किया।

इसके बाद दुष्टबुद्धि को मालूम हुआ कि उसकी योजना का उल्टा परिणाम हो गया है। चन्द्रहास तो मरा नहीं, उल्टे उसका दामाद बन बैठा है। फिर भी दुष्टबुद्धि ने उसका संहार करने का विचार नहीं छोड़ा।

दुष्टबुद्धि ने चन्द्रहास से कहा–"सुनो बेटा; आज अर्द्ध रात्रि के वक्त तुम चन्डीदेवी के मंदिर में जाकर उनकी पूजा कर आओ। यह एक बढ़िया मुहूर्त है।" अपने पिता के द्वारा चन्द्रहास से ये बातें कहते मदन ने सुन लिया।

अर्द्ध रात्रि के वक्त चन्द्रहास जब चन्डी के मंदिर में जाने लगा, तब विषया को संदेह हुआ, उसने चन्द्रहास को मना किया। लेकिन यह शुभ मुहूर्त अपने लिए भी लाभदायक होगा, यह सोचकर मदन मंदिर में पहुँचा, तब बधिकों ने उसकी हत्या की।

दूसरी बार भी दुष्टबुद्धि का षड़यंत्र सफल न हुआ, उल्टे उसी के पुत्र की मौत हो गई। इस घटना का प्रभाव दुष्टबुद्धि पर ऐसा पड़ा कि अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही उसका कलेजा फट गया और वह वहीं पर मर गया।
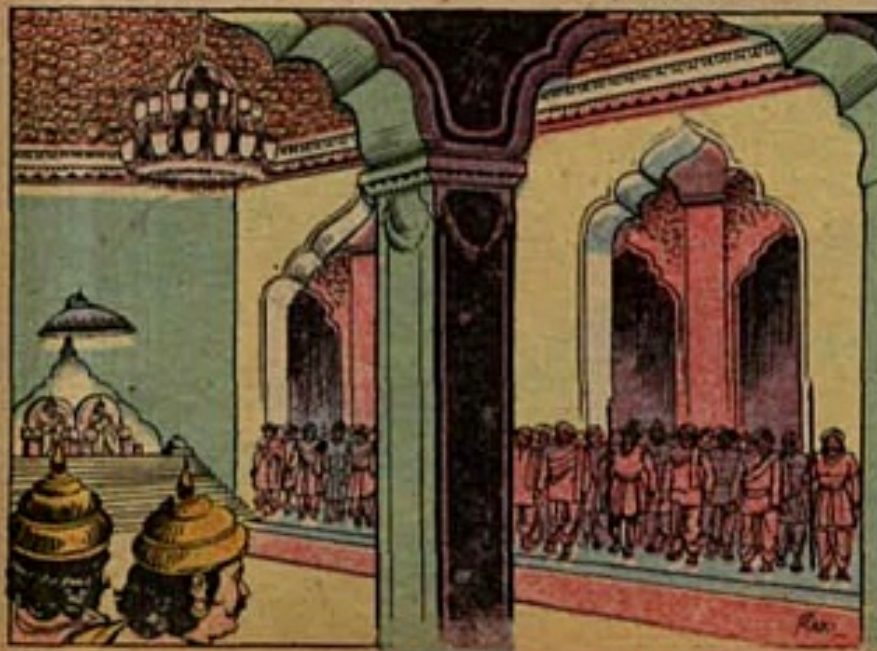
इसके बाद राजा ने अपनी पुत्री का भी विवाह चन्द्रहास के साथ किया। उस राजा के अनंतर चन्द्रहास ही राजा बन बैठा। उसने कई वर्षों तक राज्य किया और एक बहुत बड़े राजा के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

डर के माने?

एक जंगल में एक बड़ा तालाब था।

उस तालाब के किनारे की एक झोंपड़ी में एक गरीब औरत रहा करती थी। उसके सुमंत नामक एक लड़का था। माँ ने अपने लड़के को बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा।

एक दिन रात को माँ और बेटा अपनी झोंपड़ी में आराम से सो रहे थे। अचानक आँधी और वर्षा के साथ बिजली का कड़कना भी शुरू हो गया। आँधी-वर्षा की आवाज़ सुनकर माँ जाग गई। उसने अपने बेटे को जगाकर कहा–"बेटा, मुझे तो डर लगता है, तुम खिड़कियाँ बंद कर दो।"

सुमंत नींद से जाग पड़ा। आँखें मलते हुए उसने अपनी माँ की बातें सुनीं। उसने 'डर' नामक शब्द पहली बार अपनी ज़िंदगी में सुना था। इसलिए उसने पूछा–"माँ, मैं तो खिड़कियाँ तो बंद कर लूँगा, लेकिन यह बताओ, 'डर' के माने क्या होता है?"

माँ ने अपने बेटे के इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। वह यह सोचकर फिर सो गई कि इस छोटे लड़के को क्या समझावे! वह वास्तव में उस सवाल का जवाब भी दे नहीं सकती थी।

इस पर सुमंत के मन में यह जिज्ञासा पैदा हो गई कि 'डर' क्या होता है? इसे ज़रूर देखना चाहिए।

यों विचार करके सुमंत ने धीरे से किवाड़ खोल दिये और घर से बाहर चल पड़ा। वह उस अंधेरी रात में, आँधी-वर्षा में, जंगल के बीच अकेले ही यों चिल्लाते भटकने लगा–"हे डर! तुम कैसे हो? कहाँ रहते हो? मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ। मेरे सामने आ जाओ।"

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

"बेटा, तुम आ गये? झूला न पकड़ने की हालत में मैं परेशान हो किसी का इंतज़ार कर रही थी। तुम मुझे अपने कंधों पर खड़े हो जाने दो, तो झूले से मैं अपने बच्चे को उतार दूँगी!" यों कोई जवाब सुनाई दिया!

सुमंत वहाँ से चल पड़ा। एक मकान के भीतर घुस पड़ा। वहाँ पर उसने देखा एक औरत खड़ी हुई है। शहतीर से एक झूला झूल रहा है।

वास्तव में वह मानवी न थी, राक्षसी थी। यह बात मालूम न होने की वजह से सुमंत ने उस औरत को अपने कंधों पर चढ़ा लिया। राक्षसी ने अपने पैरों से रौंधकर सुमंत को मार डालना चाहा। इस पर सुमंत नाराज़ हो गया और उसने राक्षसी को इस तरह खींचा जिससे वह नीचे गिर गई।

वह राक्षसी झटके खाकर तेजी से औंधे मुँह जमीन पर गिर गई जिससे उसके दो लंबे-लंबे दाँत टूट गये। वह पीड़ा के मारे चीखते-चिल्लाते वहाँ से भाग खड़ी हुई।

इसके बाद सुमंत उस घर से बाहर आया, तब तक सूरज निकल चुका था। आँधी-वर्षा थम गई थी। वह थोड़ी दूर और आगे बढ़ा।

एक जगह ऊँची ऊँची पहाड़ी शिलाओं पर बैठ चार-पाँच चोर उसे दिखाई दिये। उन लोगों ने सुमंत को देख पूछा—"अबे, तुम कौन हो? यहाँ पर चिड़ियाँ तक उड़कर आने से डरती हैं। राजा की सेना भी इस ओर झाँकने तक से डरती है। तुम निडर होकर हमारी तरफ़ बढ़े चले आ रहे हो? क्या तुम्हें अपनी मौत का भी डर नहीं होता?"

"मैं इसी ख्याल से चला आ रहा हूँ कि आखिर देख तो लूँ कि वह 'डर' भी कैसा होता है?" सुमंत ने झट से जवाब दे दिया।

यह जवाब सुनकर चोर हँस पड़ें। उन लोगों ने एक तवा, चिमटा और आटा सुमंत

के हाथ देकर कहा–"देखो, उन घने पेड़ों के बीच जो श्मशान है, उसमें जाकर इस आटे से एक रोटी बनाकर हमारे पास इसी वक्त लेते आओ, तब तुम्हें खुद मालूम होगा कि डर क्या चीज़ होता है? समझें!"

सुमंत ने मान लिया। श्मशान में जाकर उसने चूल्हा जलाया, तवे पर रोटी सेंकने लगा। तभी बगल की समाधि में से कोई बड़ा हाथ बाहर निकला और कहा–"सुनो भाई, मुझे भी तो रोटी का स्वाद चखवा दो न?"

काम में डूबा सुमंत यह जवाब सुनकर खीज उठा और उसने डांटकर कहा–"हूँ, तुम्हें रोटी का स्वाद चखवाना है? ज़िंदा लोगों की भूख मिटाने के पहले मैं तुम्हारी ही भूख मिटा देता हूँ!" यों कहकर हाथ के चिमटे से सुमंत ने समाधि से ऊपर उठे हाथ पर दे मारा, फिर क्या था; चोट खाकर वह हाथ उसी वक़्त समाधि के अंदर चला गया।

इसके बाद सुमंत रोटी सेंककर चोरों के पास लौट आया और उन्हें सारी बात समझा दी। चोर सुमंत की निडरता देख घबरा गये।

"भाई, हम तो तुम्हें 'डर' को तो नहीं दिखा सकते, मेहर्बानी करके तुम जल्दी यहाँ से चले जाओ, तुम्हारा पुण्य होगा। हमें यों ही जीने दो।" यों चोर गिड़गिड़ाने लगे।

इसके बाद सुमंत वहाँ से फिर चल पड़ा। थोड़ी दूर और जाने पर एक बूढ़ी दिखाई दी, उसने पूछा–"बेटा, तुम क्यों यों जंगल में भटकते हो? तुम किस गाँव के रहनेवाले हो? क्या काम करते हो?"

सुमंत ने सारा वृत्तांत सुनाकर कहा–"नानी, 'डर' कैसा होता है? यही देखने मैं घर से निकला हूँ, लेकिन अभी तक मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई।"

इस पर बूढ़ी हँसकर बोली–"तुम्हारे जैसी मेरी भी एक पोती है, मेरे साथ

चलो, शायद वह तुम्हारी इच्छा की पूर्ति कर सके।" यों समझाकर बूढ़ी सुमंत को अपने घर ले गई।

नानी की पोती बड़ी चतुर थी। सुमंत की सारी कहानी सुनकर उसने एक उपाय किया। खाने का वक़्त हो गया था, इसलिए सुमंत को खाना परोसकर वह थोड़ी दूर खड़ी हो गई, लेकिन जब सुमंत खाने का एक कंवल मुंह में रखने जा रहा था, तब वह बोली–"थोड़ा रुक जाओ, तरकारी का मटका लाना भूल गई हूं।" यों कहकर वह रसोई घर के भीतर चली गई और एक बहुत बड़ा मटका लेकर उसने सुमंत के सामने रखा।

सुमंत ने तरकारी परोसने के ख़्याल से मटके का ढक्कन खोला। दूसरे ही क्षण मटके के अन्दर से 'टप' 'टप' की भयंकर आवाज़ सुनाई दी, सुमंत 'आं' चिल्लाकर डर के मारे पीछे की ओर लुढ़क पड़ा। मटके के अन्दर एक गवरैया बंद था, वह फुर्र से बाहर उड़कर चला गया। डर का पता न रखनेवाला सुमंत उस गवरैय की ओर देखता रह गया।

नानी की पोती ने खिल-खिलाकर हँसते हुए पूछा–"अब जान गये हो न कि 'डर' कैसा होता है?"

सुमंत को सचाई माननी पड़ी। वह बोला–"हाँ, अब मुझे मालूम हो गया कि डर क्या होता है! अब मैं अपनी माँ के पाच चला जाऊँगा। तुम दोनों भी मेरे घर चलोगी तो मेरी माँ बहुत खुश होगी।" यों कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

नानी और पोती के कोई किसी पुरुष का सहारा न था, इसलिए वे दोनों सुमंत की इच्छा पर उसके साथ चल दिये। सुमंत की माँ बहुत खुश हो गई। वे सब एक ही परिवार के रूप में अपने दिन काटने लगे। सुमंत भी अब दिल लगाकर काम करते अच्छा आदमी कहलाया।

थोड़े दिन बाद सुमंत और नानी की चालाक पोती का विवाह हुआ।
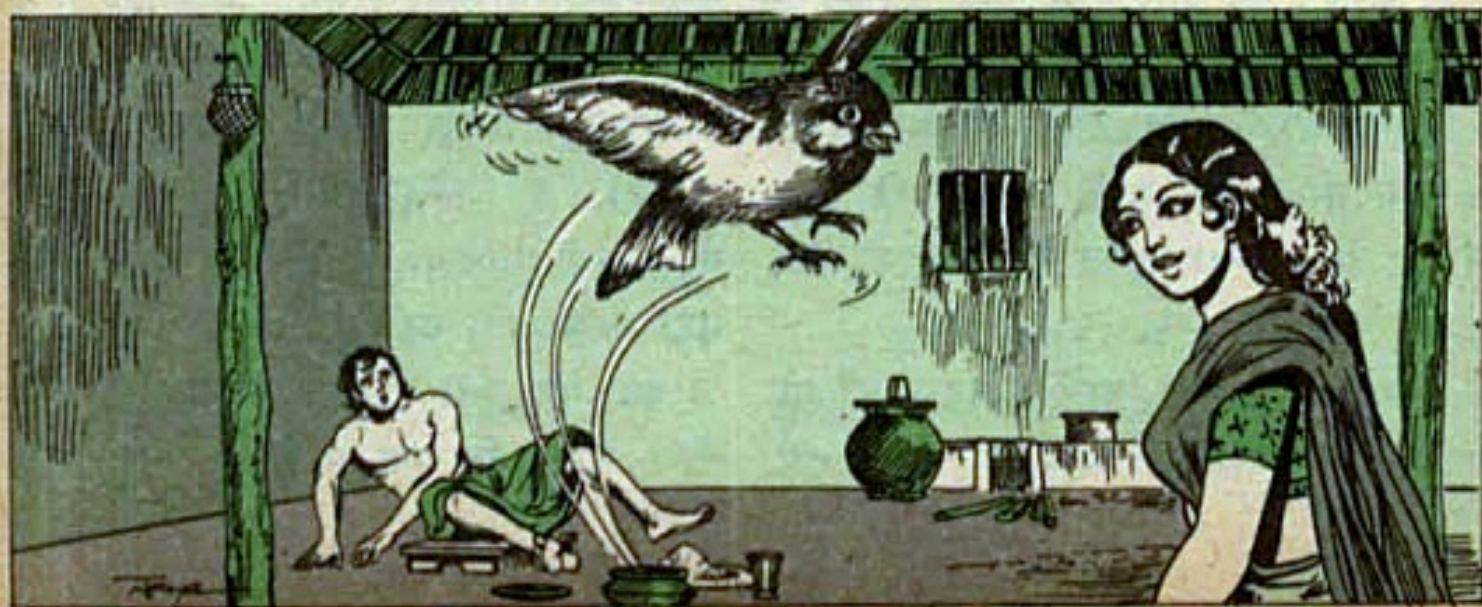
तारीफ़ का रहस्य

मगध देश का राजा चन्द्रसेन ने एक बार अपने मंत्री को बुलाकर समझाया कि वह वेश बदलकर देश का भ्रमण करे और राज्य के प्रति जनता के विचार जान ले। मंत्री ने लौटकर बताया–"महाराज, जनता सर्वत्र आप की तारीफ़ करती है।" राजा ने यही सोचा कि उसकी प्रजा सुखी है।

कई साल बाद राजा चन्द्रसेन की अचानक मृत्यु हो गई और उसका पुत्र इंद्रवर्मा गद्दी पर बैठा। उसने भी जनता की राय जानने के लिए मंत्री को देशाटन पर भेजा। दूसरे ही दिन मंत्री ने लौटकर बताया–"महाराज, हमारे राज्य की दक्षिणी दिशा में स्थित विक्रमपुरी की जनता आप की तारीफ़ करते नहीं थकती।"

तीसरे दिन राजा इंद्रवर्मा वेष बदलकर विक्रमपुरी पहुंचा और वहां तक अच्छा रास्ता न होने की वजह से बड़ी यातनाएँ झेलकर लौट आया। इस पर उसने तत्काल विक्रमपुरी जाने के लिए एक बढ़िया रास्ता बनवाया। साथ ही रास्ते के दोनों तरफ़ छायादार पेड़ लगवाये, कहीं-कहीं कुएँ खुदवाये और आराम करने के लिए सरायें भी बनवाईं।

थोड़े दिन बीत गये, इन्द्रवर्मा ने फिर एक बार जनता का विचार जानने के लिए अपने मंत्री को देशाटन पर भेजा।

इस बार मंत्री ने लौटकर निवेदन किया–"महाराज, अवंतीपुर की जनता आप के प्रति बड़ी ही श्रद्धा रखती है।"

राजा वेष बदलकर अवंतीपुर पहुँचा। राजा को मालूम हुआ कि वहाँ की जनता के लिए पीने के पानी का प्रबंध नहीं है। पीने के पानी के वास्ते उस गाँव के लोगों को बड़ी दूर से पानी मँगवाना पड़ता है। फिर क्या था, राजा ने अवतीपुर के

राजशेखर वर्मा

ग्रामवासियों के लिए कई तालाब और कुएँ खुदवाये।

थोड़े साल और बीत गये। राजा इंद्रवर्मा ने अपने मंत्री को बुलाकर शासन के प्रति जनता की राय जानने के लिए भेजा। इस बार मंत्री ने लौटकर निवेदन किया–"महाराज, कांचनपुर की जनता को छोड़ राज्य में और कहीं भी जनता आप का नाम तक नहीं ले रही है।"

इस पर राजा इंद्रवर्मा वेष बदलकर कांचनपुर पहुँचा और कठिनाई को देखा। वह यह थी कि कांचनपुर के समीप में स्थित नदी के उस पार बड़ी हाट लगती है, लेकिन नदी पर कोई पुल न होने से वहाँ की जनता बड़ी मुसीबतें झेल रही है।

यथा शीघ्र राजा ने कांचनपुर के समीप की नदी पर पुल बनवाया।

थोड़े साल और बीत गये। इंद्रवर्मा ने इस बार भी मंत्री को सलाह दी कि वह अपना वेष बदलकर देशाटन करे और जनता की राय जान ले।

इस बार मंत्री ने लौटकर बताया–"महाराज! देश के किसी भी कोने की जनता आप का नाम तक नहीं ले रही है।"

इस पर राजा इंद्रवर्मा ने मुस्कुराकर कहा–"मंत्रीवर! यह तो राज्य की संपन्नता का एक शुभ लक्षण है। अगर जनता मेरी याद नहीं करती है तो इसका मतलब है कि जनता को मुझसे किसी सहायता की जरूरत नहीं है और वे बड़ी सुखी हैं। जनता के लिए किसी चीज़ की जरूरत होती है तो वह राजा पर ही निर्भर होती है। वास्तव में जनता राजा के प्रति अच्छी ही राय रखती है। जैसे कामनाएँ रखनेवाले लोग भगवान की याद करते हैं, वैसे ही लोग राजा का स्मरण करते हैं। जो लोग राजा या भगवान को भूल जाते हैं, इसका मतलब यही होता है कि वास्तव में कठिनाइयों के समय ही वे राजा या भगवान की याद करते हैं। मेरे पिताजी इस रहस्य को जानते न थे।" यों राजा इंद्रवर्मा ने मंत्री को समझाया।
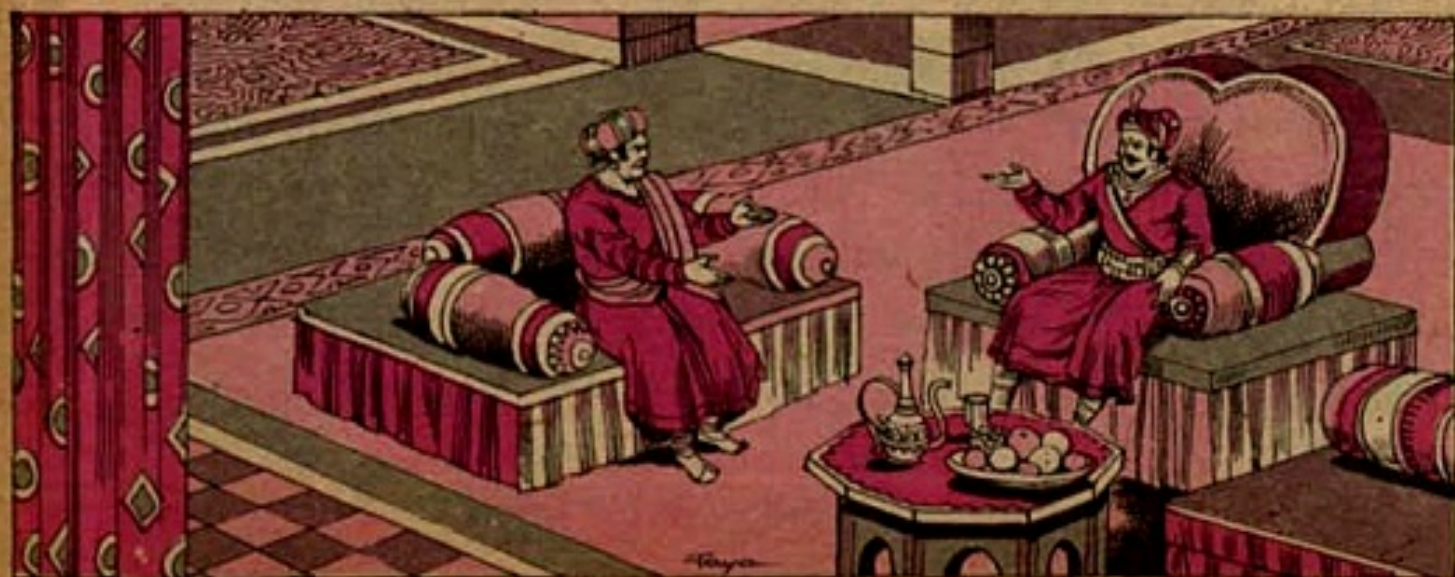
विश्वास की दवा

गोपवर नामक गाँव में रामशास्त्री नामक एक वैद्य रहा करता था। लोग कहा करते थे कि उसका इलाज अपूर्व होता है। अगर कोई रामशास्त्री के इलाज की तारीफ़ करते अपनी राय देते–"आप तो साधारण वैद्य नहीं हैं, साक्षात् धन्वंतरी हैं; बस, आप के हाथ के स्पर्श से ही भयंकर बीमारी भी पल भर में गायब हो जाती है।" तो रामशास्त्री यही जवाब देता–"इसमें मेरा बड़प्पन कुछ भी नहीं है। मुझ से भी महान कई वैद्य आस-पास के गाँवों में हैं। चूंकि आप लोगों का मेरे प्रति जो विश्वास है, उसी के कारण आप की बीमारियाँ ठीक होती हैं।"

रामशास्त्री की इस विनय के कारण उसका यश बढ़ता गया, लोग उसकी तारीफ़ करते यही कहते–"रामशास्त्री एक बहुत बड़े वैद्य होकर भी कैसे विनयशील हैं?"

एक बार अचानक रामशास्त्री दस्त और कै का शिकार हो गया। यह खबर मिलते ही गाँव के कई लोग उसके घर आ धमके और तरह-तरह की सलाहें देने लगे। कुछ लोगों ने कोई दवा बताई, कुछ लोगों ने सुझाया–"बताइये, हम आप की दवाइयों की पेटी से कौन सी दवा निकालकर आप को दें?" कुछ और लोगों ने सलाह दी–"पड़ोसी गाँव के लक्ष्मण शास्त्री से आप दवा क्यों नहीं लेते?"

वास्तव में लक्ष्मण शास्त्री का नाम सुनते ही रामशास्त्री का दिल उछल पड़ा। रामशास्त्री जिन लोगों को बड़े वैद्य मानते थे, उनमें लक्ष्मणशास्त्री एक था। इसलिए रामशास्त्री एक गाड़ी जुतवाकर लक्ष्मणशास्त्री के गाँव पहुँचा।

पर लक्ष्मणशास्त्री के गाँव पहुँचकर रामशास्त्री ने देखा कि उसके घर पर

रामलाल यादव

ताला लगा हुआ है। समाचार मिला कि लक्ष्मणशास्त्री को कुत्ते ने काट लिया है, इसलिए वह गोपवरं के मंगलशास्त्री नामक वैद्य की खोज में चला गया है।

रामशास्त्री ने सोचा कि अगर लक्ष्मण शास्त्री का मंगलशास्त्री के इलाज के प्रति ऐसा गहरा विश्वास है तो मैं भी उसी से इलाज करा सकता हूँ। जो वैद्य लक्ष्मण शास्त्री के काम आ सकता है, वह मेरे लिए क्यों नहीं?" यों सोचकर रामशास्त्री अपने ही गाँव के लिए लौट पड़ा।

पर मंगलशास्त्री के घर तक गाड़ी के पहुँचने का रास्ता न था, इस कारण थोड़ी दूर जाने पर रामशास्त्री गाड़ी से उतर पड़ा और लोगों के कंधे का सहारा लेकर पगडंड़ी के रास्ते से मंगलशास्त्री के घर की ओर चल पड़ा। जब वे लोग मंगलशास्त्री के घर पहुँचे, तब भीतर से उन्हें रोने की आवाज सुनाई दी। घर को लोगों की भीड़ घेरे हुए थी। उस भीड़ में लक्ष्मण शास्त्री को रामशास्त्री ने देखा।

रामशास्त्री ने लक्ष्मण शास्त्री से पूछा— "अजी सुनिये, लोग रोते क्यों हैं? क्या मंगलशास्त्री के यहाँ इलाज पानेवाला कोई व्यक्ति मर गया है?"

लक्ष्मण शास्त्री तो रामशास्त्री को पहचानता न था। उसने रामशास्त्री से कहा—"कोई बीमार व्यक्ति नहीं, बल्कि मंगल शास्त्री का ही देहांत हो गया है। वह कल रात से दस्त और वमन की बीमारी से परेशान था। वह तो सभी लोगों की बीमारियों के लिए मंत्र फूँकता है, पर खुद उसके मंत्रों पर उसका विश्वास न था। इसलिए कहते हैं कि वह कोई रामशास्त्री नामक वैद्य के यहाँ जाकर इलाज पाने का निश्चय करके घर से चल पड़ा, मगर रास्ते में ही उसकी मौत हो गई।"

इस पर रामशास्त्री ने अपने साथियों से कहा—"चलो, मैं अपनी बीमारी का इलाज खुद कर लेता हूँ। अब मेरे प्रति मुझ में ही विश्वास पैदा हो गया है।"

पत्थर की क़ीमत

रामलोचन रत्नों का पारखी है। उसके पड़ोस में एक अमीर रहा करता था। रामलोचन ने देखा कि जीवन नामक एक गरीब व्यक्ति प्रति दिन अमीर के घर आता-जाता है। इस पर एक दिन रामलोचन ने उसे अपने निकट बुलाकर पूछा—"भाई, रोज तुम अमीर के घर आते-जाते हो, बात क्या है?"

"मैं अपनी कमाई में से प्रति दिन थोड़ा अंश अमीर के यहाँ जमा करता हूँ। अब मेरी बेटी का रिश्ता क़ायम हो गया है, मैं कल सारा धन ले लूंगा।" जीवन ने कहा।

रामलोचन को पता लगा कि अमीर व्यक्ति जीवन को धोखा देने की सोच रहा है, इसलिए उसने जीवन को एक उपाय बताया। फिर क्या था, जीवन चार छोटे-छोटे पत्थर ले जाकर अमीर के हाथ में दे उन्हें छिपाने को कहा। अमीर ने वे पत्थर लाकर रामलोचन को दिखाया। रामलोचन ने बड़ी देर तक उनकी जांच करके बताया—"ये तो कच्चे रत्न हैं, इन्हें सान धरना है, तब प्रत्येक की क़ीमत पांच-छे हज़ार की हो सकती है।"

इसके बाद रामलोचन ने जीवन को समझाया—"अब तुम अमीर से माँगकर अपना धन ले लो।" इस पर अमीर ने जीवन के रुपयों के साथ कोई चार पत्थर देकर भेज दिया और जीवन से जो पत्थर प्राप्त थे, वे रामलोचन के हाथ देकर उनकी सान धरवाने को कहा।

"भाई साहब! ये तो हीरे नहीं, पत्थर हैं। इन्हें मैंने ही जीवन के हाथ दिया था। कहा गया है कि एक हज़ार झूठ बोलकर एक शादी करो। मैंने जीवन की लड़की की शादी के वास्ते एक ही झूठ बोल दिया है।" रामलोचन ने समझाया।

सच्चा सौंदर्य

एक गाँव में रामप्रसाद और कृष्णप्रसाद नामक दो दोस्त थे। दोनों बचपन से ही साथ-साथ पढ़ते रहें और बड़े होने पर उसी गाँव के वे स्थिर निवासी हो गये। वे हर बात में एक दूसरे की सलाह लिया करते थे।

सुंदर वस्तुओं का इस्तेमाल करना, सुंदर वस्त्र धारण करना और हमेशा सुंदर दिखाई देना रामप्रसाद को अत्यंत प्रिय था। इसी प्रकार वह एक सुंदर कन्या के साथ शादी करने की कामना रखता था।

अचानक रामप्रसाद का पिता दिल के दौरे की बीमारी का शिकार हो गया और मरते वक़्त उसने अपने बेटे से अपने एक मित्र की कन्या के साथ शादी करने की शपथ कराई।

रामप्रसाद के पिता के दोस्त की कन्या रुक्मिणी सांवले रंग की थी, पर घर-गृहस्थी के कार्य में वह बड़ी चतुर थी। उस कन्या के साथ शादी करने की इच्छा न रखने के कारण अपने पिता को वचन देने तथा अपने मित्र कृष्णप्रसाद के प्रोत्साहन से भी उसने रुक्मिणी के साथ शादी कर ली।

रुक्मिणी बचपन से ही बड़ी कठिनाइयों में फली। बड़ी सहनशीलता और विनय शीलता रखती थी और सारे काम दिल लगाकर किया करती थी। रामप्रसाद के नींद से जागने के पहले ही वह घर के सारे काम पूरा कर लेती और घर की सफाई करती, तब वह नहा-धोकर अपने पति को जगा देती थी।

फिर भी रामप्रसाद अपनी पत्नी के प्रति कोई अच्छी धारणा नहीं रखता था। उसके दिल को हमेशा यह बात खुरेदती थी कि वह एक सुंदर युवती के साथ शादी नहीं कर पाया।

कृष्णमोहन गुप्त

कई महीने बीत गये। एक दिन कृष्ण प्रसाद ने रामप्रसाद के घर आकर सूचना दी कि उसकी शादी का रिश्ता तै हो गया है, इसलिए कन्या को देखने के लिए वह भी उसके साथ चले। रामप्रसाद ने यह बात मान ली। कृष्णप्रसाद को उस जून अपने घर खाना खिलाया और उसके साथ कन्या को देखने वह भी चल पड़ा।

दुलहिन पार्वती असाधारण सौंदर्यवती थी। सौंदर्यप्रेमी रामप्रसाद पार्वती को देखता ही रह गया। वह रिश्ता कृष्णप्रसाद के लिए पक्का हो गया। इस पर रामप्रसाद ने प्रकट रूप में अपने मित्र कृष्णप्रसाद का अभिनंदन तो किया, पर भीतर ही भीतर वह उसकी क़िस्मत के प्रति ईर्ष्या से भर उठा।

जब से पार्वती उसके मित्र की पत्नी बन गई है, तब से रामप्रसाद के मन में अपनी पत्नी रुक्मिणी के प्रति विमुखता बढ़ती गई। रुक्मिणी बड़ी लगन के साथ रामप्रसाद के प्रति जो सेवा करती थी, उसके प्रति जरा भी उसके मन में कृतज्ञता का भाव न रहा।

कृष्णप्रसाद की पत्नी जब ससुराल में आई, तब अपने मित्र की गृहस्थी देखने एक दिन रामप्रसाद उसके घर पहुँचा।

धूप चढ़ आई थी, पर आंगन में झाड़ू देकर पानी छिड़काया नहीं गया था।

कृष्णप्रसाद ने अपने मित्र रामप्रसाद को भीतर आने का स्वागत किया। सारा घर गंदा था, चीज़ें इधर-उधर तितर-बितर पड़ी थीं। कृष्णप्रसाद ने रामप्रसाद के चेहरे पर मायूसी देखी।

इतने में पार्वती उधर आ निकली। उसके बाल बिखरे हुए थे, चेहरे पर पसीना था, उनींदी आँखों से वह ऐसी लगी, मानो अभी अभी नींद से जाग उठी हो। उसने रामप्रसाद की ओर लापरवाही से देखा और अपने पति कृष्णप्रसाद को भीतर बुला ले गई।

घर के भीतर जाते हुए कृष्णप्रसाद बोला–"दोस्त! मैं अभी लौटता हूँ। बैठ जाओ।"

रामप्रसाद अनिच्छापूर्वक ऐसे बैठ गया, मानो काटों पर बैठा दिया गया हो। उसने भांप लिया कि घर के अन्दर कृष्णप्रसाद अपनी पत्नी को गुप्त रूप से कोई बात समझाने की कोशिश कर रहा है।

वैसे रामप्रसाद को कृष्णप्रसाद की बातें तो सुनाई न देती थीं, पर पार्वती की बातें साफ़ सुनाई देने लगीं। वह कह रही थी–"ऐरे-गैरे और नत्थू-खैरों को खिलाने के लिए यह सराय थोड़े ही है? यह तो इसी गाँव का है, इसे खाना खिलाने की क्या ज़रूरत है?"

कृष्णप्रसाद झट से बाहर आया, पर देखता क्या है! रामप्रसाद घर से चला जा रहा है। वह यह सोचकर दुखी हुआ कि उसकी पत्नी की बातों से न मालूम उसके दोस्त रामप्रसाद का दिल कैसे दुख गया होगा। लेकिन उसने यह कल्पना तक न की कि पार्वती ने रामप्रसाद को कैसा अच्छा सबक़ सिखाया है।

घर लौटते रामप्रसाद ने सोचा–"सच्चा सौंदर्य क्या है?" घर पहुँचते ही उसने अपनी पत्नी को देख अपने इस सवाल का उत्तर खुद जान लिया। रामप्रसाद को लगा कि रुक्मिणी जैसी सुंदर नारी को उसने कभी कहीं देखा तक नहीं है।
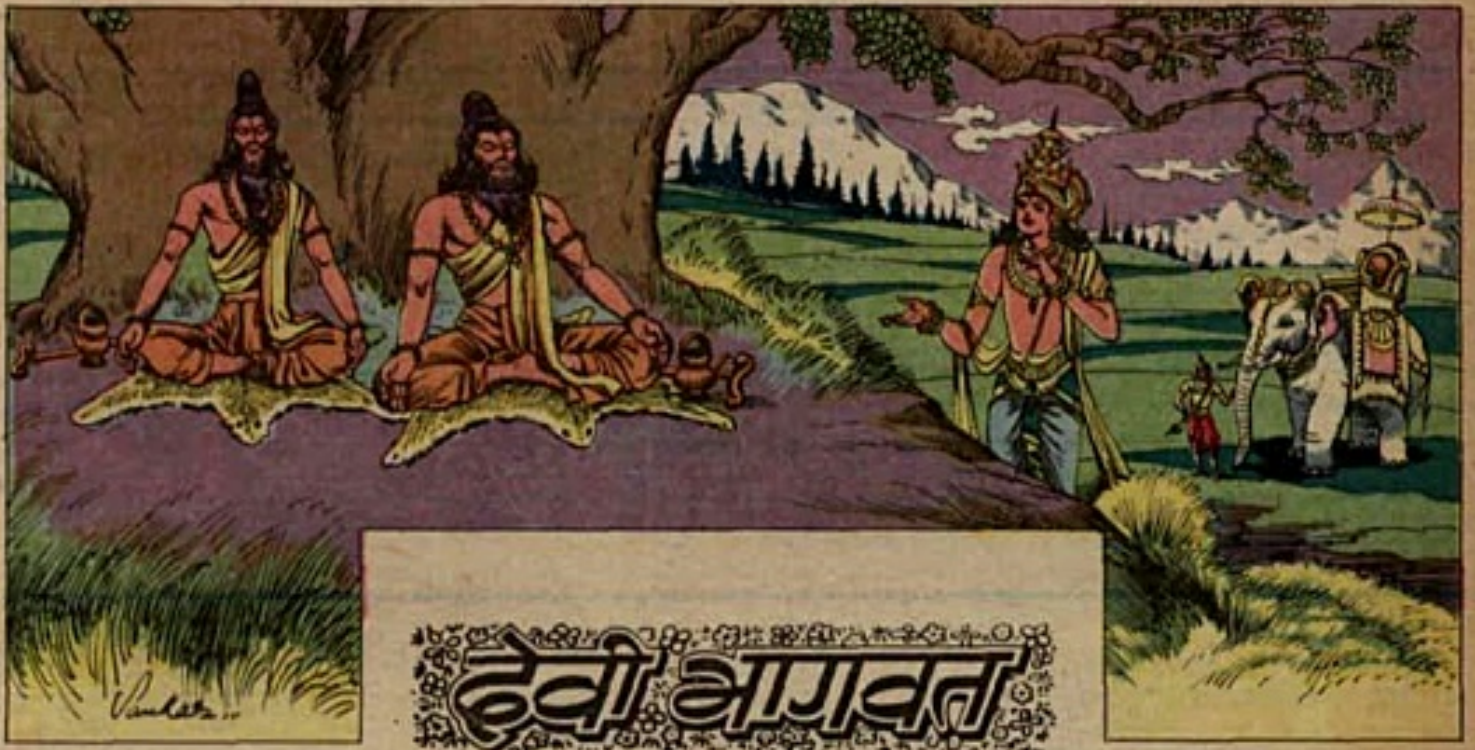
ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में से धर्मु नामक व्यक्ति ने दक्ष प्रजापति की पुत्रियों में से दस कन्याओं के साथ विवाह किया। धर्मु के चार पुत्र पैदा हुए। उनके नाम क्रमश: यों हैं–हरि, कृष्ण, नर और नारायण। उनमें से बड़े दोनों योगाभ्यास करते योगी बन गये।

नर-नारायण ने हिमालय पर्वत पर जाकर मंदाकिनी नदी के तट पर एक हज़ार वर्षों तक तप किया। उस तप के प्रभाव से पहाड़ विचलित हुए। पृथ्वी कांप उठी। चाहे कोई भी व्यक्ति भयंकर तप करे, इंद्र को घबराने की परिपाटी है। उन्होंने नर-नारायण की तपस्या भंग करने का निश्चय किया।

इसके बाद अपने ऐरावत पर सवार हो नर-नारायण के समीप पहुँचे और बोले– "हे महात्माओ, मैं आप की तपस्या पर प्रसन्न हो आप का वांछित वर देने आया हूँ। मैं इंद्र हूँ। आप दोनों अपनी तपस्या बंद कर दीजिएगा।"

तप की समाधि में स्थित नर-नारायण ने इन्द्र की बातों पर कोई ध्यान न दिया और इसलिए उनके प्रश्नों का कोई उत्तर भी न दिया।

इस पर इन्द्र को क्रोध आया। उन्होंने एक माया की सृष्टि की। उसके परिणाम स्वरूप सिंह, बाघ, चीते, भेड़िये और नाग हज़ारों की संख्या में पैदा हुए। चारों ओर बाढ़ और दावानल

पैदा हुए। इनके साथ घना अंधकार चारों तरफ़ फैल गया। उसके साथ पत्थरों की वर्षा हुई। पर इस इंद्रजाल से विचलित न होकर नर-नारायण तपस्या में मग्न रह गये।

वर देने की बात सुनकर नर-नारायण ने ध्यान न दिया, खूँख्वार जानवरों और आंधी-वर्षा की परवाह नहीं की, इस पर इन्द्र की समझ में न आया कि नर-नारायण की तपस्या कैसे भंग करें? आखिर इंद्र ने जान लिया कि महादेवी संबंधी वाग्बीज, मायाबीज और कामबीज का जाप करते तपस्या करनेवालों को विचलित कराना किसी के लिए भी संभव नहीं है। तब इंद्र स्वर्ग को लौट गये, वसंत तथा कामदेव को बुलाकर उनसे कहा:

"नर-नारायण बदरिकाश्रम में दीक्षा-पूर्वक तप कर रहे हैं, यह हमारे लिए हितकारी नहीं है। मैंने उनका तप बंद कराने के वास्ते वरदानों का लोभ दिखाया, पर उन्होंने मेरी बातों की परवाह नहीं की। इस पर मैंने तूफान, दावानल और क्रूर मृगों की सृष्टि की, फिर भी वे विचलित नहीं हुए। अब यह कार्य तुम लोगों से ही बनेगा, इसलिए तुम्हें बुला भेजा। हे कामदेव! तुम वसंत और कई अप्सराओं को साथ लेकर वहाँ जाओ और मेरा कार्य संपन्न करो। तुमने हरि, हर और ब्रह्मा को भी जीत लिया है, ऐसी हालत में क्या ये मानव तुम्हारे सामने किस खेत की मूली हैं? रंभा आदि अप्सराओं में से उनका तपोभंग करने के लिए केवल एक ही पर्याप्त है। तुम कई सुंदर अप्सराओं को साथ लेकर जाओ, उनके सामने कोई भी तप टिक नहीं सकता।

इसके उत्तर में कामदेव ने कहा—"हे देव! मैं आप का सेवक हूँ। आप की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है। फिर भी मेरे मन की बात कहने दीजिए। मेरा डर है कि आप के कहे अनुसार मैं हरि, हर और ब्रह्मा के प्रति तपस्या

करनेवालों का तपोभंग कर सकता हूँ। लेकिन देवी के प्रति तप करनेवाले लोगों का तपोभंग करना मेरे लिए संभव नहीं है। काम बीज को हृदय में रखकर ध्यान करनेवालों को छेड़ने की मेरी हिम्मत नहीं है। नर-नारायण 'आदि शक्ति' के भक्त हैं। उनके समीप मेरे बाण पहुँच नहीं सकते।"

यह उत्तर सुनकर इंद्र बोले–"अगर तुम सीधे अपने बाणों से उन्हें हरा न सकोगे तो कोई मायोपाय करो। यह तो देव कार्य है, इसे तुम्हें जरूर संपन्न करना होगा।"

इसके बाद कामदेव ने कुछ प्रतिवाद नहीं किया। पहले वसंत को बदरिकाश्रम में भेजा और पीछे वह भी रंभा आदि अप्सराओं के साथ चल पड़ा।

उस समय तक आश्रम वसंत शोभा को लेकर अत्यंत सुंदर था। तरह-तरह के पेड़ पुष्पित थे, वायु में सुवास फैला था। तोते दल बांधकर पेड़ों पर पहुँचकर चिल्ला रहे थे। कोयल कूक रही थी। भ्रमर झंकार कर रहे थे।

नर-नारायण ने अपने चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाकर आश्चर्य के साथ देखा कि शिशिर ऋतु में वसंत शोभा कैसे आ गई! उनके मन में शंका उदित हुई कि उनका तपोभंग करने के लिए इन्द्र के द्वारा बिछाया गया यह मायाजाल है।

इस बीच मेनका आदि सोलह हज़ार पचास अप्सराओं को साथ ले कोयल, तोते सहित धनुष और पुष्प बाणों की तरकश के साथ कामदेव उनके सामने आ खड़ा हुआ। नर-नारायण ने तप रोककर कामदेव की ओर थोड़ी देर तक आश्चर्य के साथ देखा।

तब अप्सराओं ने नर-नारायण को प्रणाम करके कामोत्तेजना पैदा करनेवाला गीत गाया। उनके खेल व गीत देख आश्चर्य करते हुए नर-नारायण ने यों कहा: "हमारी तपस्या भंग करने के लिए

इन शब्दों के साथ नारायण ने अपनी दाईं जांघ पर हाथ से मारा, तत्काल ऊर्वशी अपनी सखियों के साथ पैदा हुई। उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो अप्सराओं ने मुनियों से यों कहा: "महात्माओ, हमें क्षमा कर दीजिए! आप की तपोशक्ति की महिमा न जानने की वजह से तपोभंग करने के दुरुद्देश्य से प्रेरित होकर हम आ गई हैं। न मालूम इसके पूर्व हमने कितने मुनीश्वरों के व्रतों को भंग किया है, लेकिन हमारी शक्ति आप के सामने किसी काम की नहीं रह गई है। एक प्रकार से आप के तप को भंग करने के लिए इंद्र ने हमें यहाँ जो भेजा, यह हमारे लिए भाग्य की ही बात कही जाएगी।"

इन्द्र ने तुम लोगों के साथ कामदेव और वसंत को भी भेजा है। उनकी ईर्ष्या का हमें पता चल गया है। फिर भी हमारी बातों पर थोड़ा ध्यान दो। बेचारी तुम लोग औरतें हो, बड़ी दूर से आकर थक गई हो! इस आश्रम में तुम लोग हमारा आतिथ्य ग्रहण कर आराम कर लो। इन्द्र के कहने से तुम लोग आई हो, वरना तुम लोग खुद यहाँ पर क्यों कर आ जातीं? इंद्र का यह भ्रम था! वरना हमारी तपस्या का भंग करना तुम जैसों के लिए मुमकिन है? देखती रह जाओ, हम अपने तपोबल से तुम सब के सौंदर्य को मात करनेवाली नारी की सृष्टि कर सकते हैं!"

नारायण ये बातें सुनकर हँस पड़े और बोले-"तुम लोग इस ऊर्वशी को साथ ले जाकर इंद्र को भेंट दो। तुम्हें, देवता तथा इंद्र का भी शुभ हो! अब तुम लोग जा सकती हो।"

इस पर अप्सराओं ने विनयपूर्वक निवेदन किया-"महात्मा! कृपया हमें यहाँ से जाने का आदेश न दे। आप ने अपनी जांघ से जिस ऊर्वशी की सृष्टि की, वह तथा अन्य नारियाँ भी इंद्र के पास चली जायेंगी। हमें आप की सेवा करते यहीं रहने दीजिए।"

"तुम लोग मुझ से क्या चाहती हो?" नारायण ने उनसे पूछा।

"आप जैसे महात्मा अपना वचन भंग नहीं करते। अगर आप हमारी इच्छा की पूर्ति करना चाहते हैं तो आप हमारे पति बन जाइए। यदि आप इसे नहीं मानते हैं तो हम अनाथाएँ हैं। आप के साथ रहे तो फिर हमें स्वर्ग की भी जरूरत नहीं है।" देवकांताओं ने कहा।

इस पर नारायण ने पूछा–"सर्दी, धूप और हवा को सहते हमने जो तप किया, क्या उसे तुम्हारे यौवन को समर्पित करना उचित है?"

"हे मुनिवर, हम देव-वेश्याओं के साथ अपार सुख भोगते गंधमादन पर्वत पर समय बिताने से बढ़कर उत्कृष्ट जीवन स्वर्ग में भी क्या हो सकता है?" अप्सराओं ने पूछा।

ये बातें सुन नारायण ने भांप लिया कि उनसे गलती हो गई। वे जानते थे कि अप्सराएँ उनका तपोभंग करने आई हुई हैं, ऐसी हालत में उन्हें मौन रहना चाहिए था, पर अपने धर्म के ही विरुद्ध उन अप्सराओं से भी सुंदर नारी की सृष्टि करना उनकी भूल ही थी। उनके साथ शृंगार संबंधी बातें करना बड़ी ही भूल थी। महा मोहपाश उसे घेर ही चुका है।

इस पर अप्सराओं के प्रति क्रुद्ध हो नारायण ने उन्हें भगाना चाहा, पर यह सोचकर वे संकोच में पड़ गये कि क्रोध तो हिंसा का कारण बन सकता है।

नर ने इसे भांपकर कहा–"मित्रवर, क्रोध तो किसी भी जैसे व्यक्तियों के लिए उचित नहीं है। अहंकार की वजह से ही प्राचीन काल में हमारे और प्रह्लाद के बीच भयंकर युद्ध हुआ था। आप इन अप्सराओं को शांतिपूर्वक ही भेज दीजिए!"

ये बातें सुनने पर नारायण का मन शांत हो गया, वे बोले–"इस हालत में मेरे द्वारा नारियों के साथ विहार करना कल्पना से परे की बात है। इसलिए तुम

लोग फिलहाल स्वर्ग को लौट जाओ। मेरा व्रत भंग न होने का तुम लोग अनुग्रह करोगी तो द्वापर युग में मैं तुम लोगों की इच्छा के अनुरूप आचरण कर सकता हूँ। देवताओं की इच्छा के अनुसार मैं पृथ्वी पर जन्मधारण करूँगा। तुम लोग राज कुमारियों के रूप में जन्मधारण करके विभिन्न प्रकार से मेरी पत्नियाँ बन जाओ।"

इस पर अप्सराएँ, ऊर्वशी आदि स्वर्ग में गईं और सारा वृत्तांत इंद्र को सुनाया।

ऊर्वशी के सौंदर्य को देख इंद्र चकित हो गये और उन्होंने नर-नारायण की शक्ति की प्रशंसा की।

इसके बाद नर-नारायण ने अपनी तपस्या निर्विघ्न चालू की।

कालांतर में उन दोनों ने महर्षि भृग के शाप के कारण कृष्णार्जुन के रूप में जन्म लिया। कृष्णावतार की पूर्व कथा यों है:

एक बार भूदेवी ने इंद्र के पास जाकर विनती की कि वह पृथ्वी के भार को वहन नहीं कर पा रही है। इंद्र ने उस पर कृपा करके पूछा–"तुम्हारे इस दुख का कारण क्या है?"

भूदेवी ने यों समझाया:

पृथ्वी के भार के असली कारण हैं–दुष्ट जरासंध, शिशुपाल, कंस, रुक्मि, नरक, साल्व, केशी, धेनुक, वत्सक आदि। ये लोग अत्यंत क्रूर हैं। ये परस्पर द्वेष करते हुए अधर्म का जीवन बिता रहे हैं। इनका भार मैं ढो नहीं पाती हूँ। प्राचीन काल में हिरण्याक्ष की पीड़ा से मेरी रक्षा करने के लिए विष्णु ने वराह का अवतार लिया था।

इसी प्रकार इस समय पृथ्वी के भार से अपनी रक्षा करने के लिए भूदेवी ने इंद्र से प्रार्थना की।

इंद्र ने समझाया–"तुम्हारे भार को कम करने की मैं कहाँ शक्ति रखता हूँ? तुम ब्रह्मा के पास चली जाओ, शायद वे तुम्हें कोई उपाय बता सकेंगे। मैं भी

तुम्हारे साथ चलता हूँ। चलो, हम दोनों अभी चलते हैं।"

इस पर दोनों ब्रह्मा के पास पहुँचे। ब्रह्मा ने भी भूदेवी से उसकी कठिनाइयों के बारे में पूछा।

भूदेवी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा–"कलियुग का आगमन शीघ्र होने जा रहा है। राजा लोग अपनी उदारता त्यागकर चोर और डाकुओं के रूप में बदलते जा रहे हैं! क्या यह पृथ्वी के लिए भार का कारण नहीं है? दुष्टों का संहार करके आप मेरे भार को क्यों कम नहीं करते?"

"देवी! आप की इच्छा की पूर्ति करने की शक्ति मैं नहीं रखता। इसके योग्य तो विष्णु भगवान ही हैं। चलो, हम उनके पास चलते हैं।" यों समझाकर ब्रह्मा अपने वाहन हंस पर सवार हुए। तब देवता और भूदेवी को साथ ले वैकुंठ में चले गये।

विष्णु ने सब लोगों का अलग-अलग परामर्श किया और उनके आने का कारण पूछा। ब्रह्मा ने विष्णु से निवेदन किया– "भूदेवीजी का कहना है कि वे पृथ्वी के भार को उठा नहीं पाती हैं, इसलिए अगर आप द्वापर युग के अंत में अवतार ले तो बड़ा ही अच्छा होगा! अनाथों की रक्षा करने के लिए आप के अतिरिक्त हैं ही कौन?" ब्रह्मा ने विष्णु से कहा।

इस पर विष्णु ने उन लोगों को समझाया–"योग माया के समक्ष तुम, मैं शिवजी और देवता हम सब अस्वतंत्र हैं। इसलिए वे जैसी सलाह देंगी, हम वैसा करेंगे। उनकी प्रेरणा से ही मैंने इसके पूर्व कुछ अवतार लिये हैं, ऐसा न होकर मत्स्य, वराह या अन्य क्षुद्र जंतुओं के रूप में अवतार लेने से न सुख मिलता है और न पुण्य ही। इसमें आनंद ही क्या है? मैं रामावतार लेकर कितनी कठिनाइयों का शिकार बन गया? उसमें मुझे स्वेच्छा ही कहाँ रही? इसलिए तुम लोग उस जगन्माता की प्रार्थना करो। तुम लोगों की कामना की पूर्ति होगी।" यों विष्णु ने उन्हें सलाह दी।

करनी का फल

बढ़ई शंभुप्रसाद के दो बेटे थे। बड़ा बेटा शिवराम शहर में किसी व्यापारी के यहाँ नौकरी करता था और दूसरा गोविंद अपने बाप का पेशा बढ़ई गिरी में उसकी मदद करता था।

एक बार गोविंद अपने बड़े भाई को देखने शहर में गया, तब शंभुप्रसाद को अचानक दिल का दौरा आया। शंभुप्रसाद को लगा कि वह गोविंद के लौटने तक जिंदा न रहेगा। तब वह अपने पड़ोसी धनी भूषणदास को बुला भेजा, उसके हाथ एक थैली देकर मिन्नत की–" महाशय, इस थैली में पांच हजार सिक्के हैं, मेहर्बानी करके आप यह धन मेरे बेटों के हाथ सौंप दीजिए, हो सके तो ऐसा इंतजाम कीजिए कि मेरे बेटे इस धन की वजह से आलसी न बने और वे इसके सहारे अपने दिन आराम से बिता सके।"

भूषणदास ने मान लिया, धन की वह थैली ले जाकर अपने घर छिपा रखा, तब लौट आया, इस बीच शंभुप्रसाद के प्राण निकल गये थे। उसी वक़्त शहर में रहनेवाले शंभुप्रसाद के लड़कों के पास खबर भेजी गई। बेटों ने गाँव लौटकर अपने पिता की अत्येंष्टि क्रियाएँ कीं। उन्हें घर की एक अलमारी में अपने पिता के हाथों से लिखा एक चिट दिखाई दिया। भूषणदास को बुलवाने के पहले शंभुप्रसाद ने अपने बेटों के नाम एक चिट लिखकर उसे अलमारी में रख दिया था।

उस चिट में यों लिखा हुआ था–" मैंने पांच हजार सिक्के जमाकर रखे हैं। ये सिक्के मैं धनी भूषणदास के हाथ सौंप देता हूँ। तुम लोग उनकी सलाह के मुताबिक़ इस धन का उपयोग करो, पर कभी तुम लोग आलसी न बनो।"

रमेश गुप्त

शंभुप्रसाद के बेटों ने वह चिट ले जाकर भूषणदास को दिखाया। भूषणदास ने दुख का स्वांग रचते कहा–"बेचारे, तुम्हारे बाप मेरे हाथ वह धन देने के पहले ही मौत के मुंह में चले गये।"

शंभुप्रसाद के लड़कों ने समझ लिया कि भूषणदास झूठ बोलकर धोखा देना चाहता है, क्योंकि उन्हें यह बात स्पष्ट मालूम हो गई कि उनके बाप के मरने के पहले ही भूषणदास उनके घर आया और गुप्त रूप से कोई बात कहकर चला गया, लेकिन दुबारा जब वह लौटकर आया, तब तक उनका बाप मर गया था। हो सकता है कि शंभुप्रसाद ने भूषणदास के हाथ धन सौंपने के पहले चिट लिख दिया हो, पर यह बात सच है कि उसने मरने के पहले ही वह धन भूषणदास के हाथ सौंप दिया है। क्योंकि घर में कहीं वह धन उन्हें न मिला।

शंभुप्रसाद के बेटों ने भूषणदास को इस धोखे का सबक़ सिखाना चाहा। इस वास्ते उन्होंने एक योजना बनाई और ऐसा अभिनय किया कि मानो वे भूषणदास की बातों पर यक़ीन करते हैं।

इसके थोड़े दिन बाद शिवराम ने भूषणदास के पास जाकर बिनती की–"काकाजी, मेरे पिता ने आप की सलाह के मुताबिक़ चलने को हमें बताया है। मेरा छोटा भाई गोविंद बढ़ईगिरी का पेशा करते इसी गाँव में रहना चाहता है। मैं उसे अकेले यहाँ छोड़ शहर में नहीं जा सकता। मेरे भी पेट भरने का यहाँ पर कोई उपाय कीजिए।"

"सुनो बेटा, तुम मेरे घर का हिसाब-क़िताब देखते मेरे ही यहाँ काम करो। मैं तुम्हारी थोड़ी-बहुत मदद करूँगा ही।" भूषणदास ने समझाया।

फिर क्या था, शिवराम भूषणदास के घर काम पर लग गया। उसने सारे परिवार के लोगों का विश्वास प्राप्त किया और उस परिवार के एक सदस्य के रूप

में ही रहने लगा। उसने धीरे-धीरे उस परिवार के सारे रहस्यों को जान लिया।

भूषणदास ने अपना सारा धन एक भारी संदूक़ में छिपाकर ऐसी जगह रखा, जहाँ अकसर परिवार के लोग आते-जाते हैं। उस पर ऐसा पुराना वस्त्र ढककर रखा जिससे लोग यह समझे कि उस भारी संदूक़ के अंदर पुराने कपड़े हैं और क़ीमती चीजें नहीं हैं, मगर उस परिवार के कोई न कोई सदस्य सदा उस संदूक़ पर निगरानी रखे रहता था।

शिवराम ने एक दिन मौक़ा पाकर उस संदूक़ की माप ले ली। एक दिन रात को किसी ने भूषणदास के दर्वाजे पर दस्तक दिया। भूषणदास ने दर्वाजा खोला। बाहर कोई राजकुमार की पोशाक धारणकर खड़ा था। उसके पीछे अंधेरे में थोड़े से आदमी भी थे।

राजकुमार ने भूषणदास को प्रणाम करके कहा–"मैंने सुना है कि इस प्रांत में आप से बढ़कर कोई बड़ा धनी नहीं है। मैं पड़ोसी राज्य का निवासी हूँ। अचानक हम पर आफ़त आ गई है। मैं अपनी थोड़ी-सी संपत्ति बचाकर निकल आया हूँ। मेरी सारी संपत्ति इस संदूक़ में है। आप कृपया इसे अपने घर सुरक्षित रखिये। मेरे दिन जब फिरेंगे, तब मैं आकर यह संदूक़ लेते जाऊँगा। आप मेरी यह मदद करे तो मैं कभी आप के इस उपकार को भूल नहीं सकता।"
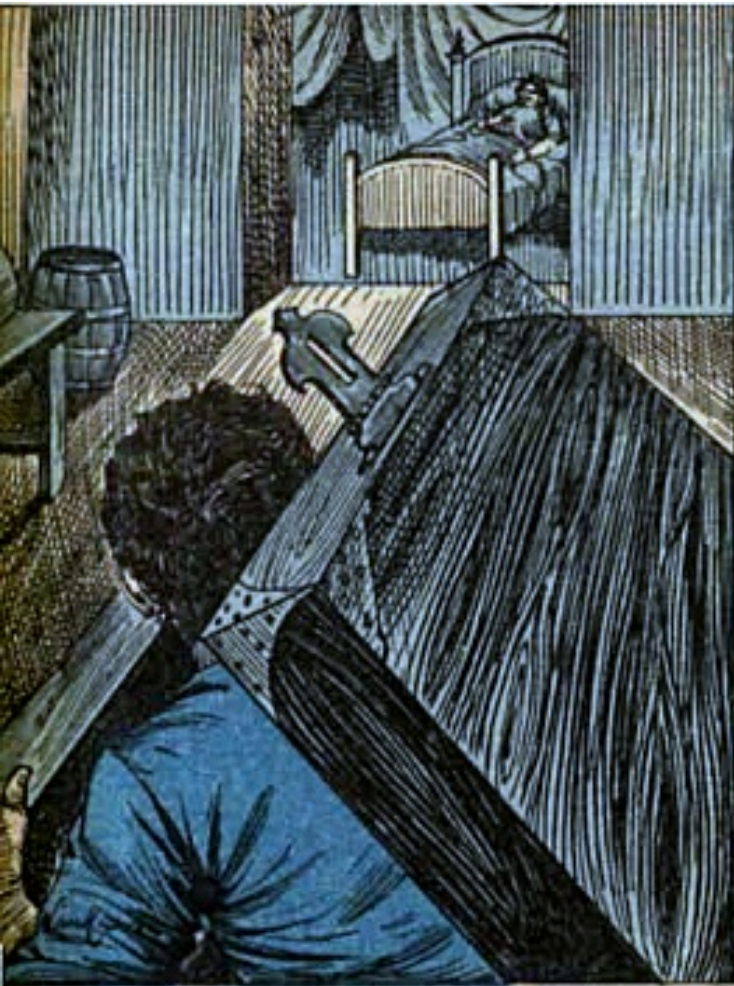
संदूक़ भूषणदास के मकान के बाहर चबूतरे पर रखा हुआ था। उस पर मखमल लपेटा हुआ था।

भूषणदास ने उस संदूक़ को अपने घर सुरक्षित रखने को मान लिया। इस पर राजकुमार ने अपने अनुचरों के द्वारा भीतर पहुँचवा दिया। वह भी एक भारी संदूक़ था। भूषणदास ने राजकुमार के संदूक़ को उसकी बगल में ही रखवा दिया।

इसके बाद राजकुमार भूषणदास से विदा लेकर चला गया। भूषणदास अपनी क़िस्मत पर फूला न समाया और वह सुख की नींद सो गया, वह सोचने लगा, अगर राजकुमार के अच्छे दिन न आये तो सारी संपत्ति उसी की हो जाएगी। अगर उसके अच्छे दिन आ गये तो उसे ज़िदगी भर राजकुमार का सहारा प्राप्त होगा। दोनों प्रकार से उसके हाथ लड्डू हैं।

फिर भूषणदास सो गया। इसके थोड़ी देर बाद राजकुमार के संदूक़ के ऊपर का मखमल खिसककर नीचे गिर गया। उसका ढक्कन ऊपर उठा। उसके भीतर से गोविंद बाहर आया। उसने फिर से उस संदूक़ को ढक दिया। भूषणदास के संदूक़ के ऊपर का पुराना वस्त्र हटाकर उसकी जगह राजकुमार के संदूक़ के ऊपर का मखमल ढक दिया और चुपचाप पिछवाड़े के दर्वाजे खोलकर बाहर चला गया।

भूषणदास जब गहरी नींद में था, तब किसी ने उसे थपकी देकर जगाया। भूषणदास चौंककर उठ बैठा, देखा, उसकी खाट के समीप कोई हथियार बंद सिपाही जैसा व्यक्ति खड़ा हुआ है। वह घबरा गया और पूछा—"तुम कौन हो? इस घर के अन्दर कैसे आ गये?"

सिपाही ने कड़ककर कहा—"तुम मेरे सवालों का जवाब दो। हमें मालूम हुआ है कि पड़ोसी देश का राजा थोड़ी देर पहले तुम्हारे घर आया और वह तुम्हारे घर दो संदूक़ छिपाकर चला गया है।

नये राजा का आदेश है कि उस राजा को तुरंत बन्दी बनावे।"

भूषणदास भय के मारे कांप उठा।

"वह राजा तो तभी चले गये। मेरे घर कोई एक संदूक़ रख गये हैं। पर मैं नहीं जानता कि उसके अन्दर क्या है? चाहे तो आप वह संदूक़ लेते जाइये।" भूषणदास ने कहा।

सिपाही ने दो संदूक़ों को देख कहा–"ये दोनों उसी के हैं।"

इस पर भूषणदास ने कहा–"महाशय, जिस पर सादा वस्त्र ढका हुआ है। वह मेरा है और जिस पर मखमल ढका है, वह उस राजा का है।" यों शपथ करने पर सिपाही ने कहा–"अच्छी बात है। आप तो बुजुर्ग मालूम होते हैं। इसलिए मैं आपकी बात पर यक़ीन करता हूँ।" यों कहकर अपने अनुचरों को पुकारा और मखमल वस्त्र ढका हुआ संदूक़ उनके द्वारा उठवा ले गया। उसी संदूक़ में भूषणदास का सारा धन था।

इस घटना से भूषणदास एकदम घबरा गया। बड़ी देर बाद जब वह थोड़ा आस्वस्थ हुआ, तब उसने सोचा कि एक बड़ी भारी आफ़त टल गई है। तब संदूक़ पर से पुराना वस्त्र हटाकर उसका ढक्कन उठाया, पर उसमें कुछ न था।

अपना सारा धन खोकर पूरे परिवार के लोग रात भर रोते रहे। सवेरे शिवराम आ पहुँचा। उसने सारी कहानी सुनी, वह भी रो पड़ा, तब बोला–"साहब, मैं अब आपके घर का हिसाब-क़िताब ही क्या देख सकूँगा? जो कुछ था, सारा खो गया।" यों कहकर आँसू पोंछते शिवराम विदा लेकर चला गया।

इसके थोड़े दिन बाद गांव में यह अफ़वाह फैल गई कि शंभुप्रसाद ने गुप्त रूप से जो धन छिपा रखा था, वह उनके बेटों के हाथ लग गया है। फिर क्या था, उस धन से शिवराम ने फिर से अपना व्यापार शुरू किया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

A. L. Syed

★

P. V. Subramaniam

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जुलाई के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : बहुत सुना, पर रास न आया!

द्वितीय फोटो : बहुत पढ़ा, पर समझ न पाया!!

प्रेषक : श्री जितेन्द्र बल्लभ, श्री केशवराय पाटन शुगर मिल्स, केशवराय पाटन, बूंदी (जिला)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI

हुर्रे
असोका ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट !
Asoka
Glucose
MILK BISCUITS
Asoka
ASOKA
GLUCOSE
हर पल
असोका
के साथ
एक नयी ताजगी का अनुभव.
जिन्दगी का भरपूर मजा.
कुरकरे, असोका ग्लूकोज मिल्क बिस्कुटों
का आनन्द लीजिए.
विद्युतीय नियन्त्रण से पूर्ण आधुनिक जर्मन
प्लान्ट में स्वास्थ्यकारी गुणों से निर्मित.
दिलकश और ताजे शक्ति से परिपूर्ण
आज ही अपने परिवार के लिए एक पैकिट खरीदिये !
BREEZE
असोका बिस्किट्स हैदराबाद आ. प्र.
असोका क्रेस्पो तथा क्रेस्पोक्रेक के निर्माता

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 9 (Hindi)

1st Prize: Sree Rajeeb Kr. Dutta, Dibrugarh (Assam). *2nd Prize*: Yogesh Karhayp, New Delhi-110 023. *3rd Prize*: Radhanath Mehrotra, Varanasi - 221 001. *Consolation Prizes*: Surender Verma, New Delhi - 22; Anil Balchandra Parat, Vadodara (Gujarat); Baljinder Singh, New Delhi - 8; Ajay Kumar Chaurasia, Mathura (U. P.); Leela Rupal, Durgapur - 4.

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 1979 Regd. No. M. 5452